अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 19 मई 2024 www.amritvichar.com

वृक्ष सदियों से हमारे लिए प्रेरणा का केंद्र रहें हैं। संभवत : प्रथम प्राणी या मनुष्य का जन्म भी किसी न किसी वृक्ष के नीचे हुआ होगा। ग्रंथ कहते हैं –वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि। वृक्ष वैज्ञानिक, चिकित्सक, दार्शनिक और धार्मिक महामनीषियों के लिए भी प्रेरणा केंद्र रहे हैं। स्वयं भगवान बुद्ध को पीपल के वृक्ष के नीचे बोधिसत्व का अनुभव हुआ था। यह तो वृक्षों के आध्यात्मिक पक्ष का एक अंश मात्र है। वस्तुत : वृक्ष हमारे लिए अनेक अर्थों में प्रेरणा के केंद्र हैं। आइए देखते हैं उन समस्त प्रेरणात्मक पक्षों को।

डा. श्रीधर द्विवेदी
वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ, नेशनल हार्ट इंस्टिट्यूट, नई दिल्ली

पौधों से कितना कुछ सीख सकते हैं हम

जीवंतता/सप्राणता का भाव

वृक्ष प्राणवान होते हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री जगदीश चंद्र बसु ने 10 मई, 1901 में लाजवंती (छुईमुई) पर अपने प्रयोगों से संपूर्ण विश्व को यह कहकर चमत्कृत कर दिया कि पौधों में भी जान होती है। वे सुख-दुःख की अनुभूति करते हैं। अपने ऊपर किए गए निरंतर प्रहार, चोट-चपेट को सहते रहते हैं और फिर उठ खड़े हो जाते हैं। भारतीयों के लिए यह बात कोई अजूबी चीज नहीं थी,क्योंकि वेद-उपनिषद और रामायण (वाल्मीकि कृत/गोस्वामी तुलसीदास), श्रीमद्भगवद्गीता आदि सभी ग्रंथों में वृक्ष और वनस्पतियों को जीवंत,पूजनीय और सरंक्षणीय माना गया है,परंतु मानव मन के अंदर समाए लोभ ने पेड़-पौधों को भी चैन से नहीं रहने दिया है। मनुष्य मन की इस क्रूरता के कुछ ताजा उदाहरण मैं आप सबके समक्ष रखना चाहूंगा।

कंकाल श्रीफल

एक उपवन में नगर प्राधिकरण ने बेल के कुछ नवजात पौधे लगाए। उन्हें भली भांति सवर्णें कि कौन कहें कुछ धर्म-प्राण अति उत्साही लोगों ने उन पौधों की नवजात पत्तियों को नोच डाला। परिणाम यह हुआ कि बगीचे के सभी नवजात श्रीफल सूखकर कंकाल हो गए। बलिहारी हो वसंत ऋतु की और वृक्षों की पुनर्जीवन शक्ति की अब उनके नीचे के भाग से नईं कोपलें फूटने लगी हैं। भगवान बचाए इन आस्तिक महामतियों से जो इन नव किसलय पत्रों को फिर से न उचार लें।

हताहत अर्जुन का नवजीवन

अर्जुन वृक्ष की हृदय रोगों में उपयोगिता असंदिग्ध है। उसकी छाल (वल्कल) के अंदर हृदय शूल कम करने, हृदय की पम्पिंग शक्ति बढ़ने, मूत्रल प्रवृत्ति और चिकनाई दोष कम करने का गुण होता है। प्रकृति की ऐसी उदार मनोवृत्ति है कि मार्च-अप्रैल में औषधि प्रदायक छाल तने से स्वयं उतरने लगती हैं,परंतु हम मनुष्य प्रकृति की इस महिमा की कृतज्ञता कब मानने वाले। अर्जुन के तने से उसकी छाल को निकालने हेतु नुकीले यंत्रों से उस पर घाव करते हैं। उसे चोटिल करते हैं। फल यह होता है कि हरा-भरा वृक्ष कुछ दिनों में ठूंठ हो जाता है। दुर्भाग्य का मारा अर्जुन का एक ऐसा वृक्ष अपनी प्रबल जिजीविषा के बल पर इस वसंत में पुनः हरा-भरा होने का पर्यटन कर रहा है (कोटिशः नमन प्रकृति की ठूंठ से हरीतिमा की और पुनः अग्रसर होने की उर्वरा शक्ति की, हे अश्वस्थ तुम प्रणम्य हो,क्योंकि तुमने हम सबके कायाकल्प की संभावना पर पथ-प्रशस्त किया। उसके व्यावहारिक स्वरूप का पुनः दर्शन करा दिया और देवी नीम तुम्हारी महिमा का क्या बखान करें-जल चक्र, प्रभूत प्राण वायु, मुख शुद्धि, दंत-सुरक्षा, काष्ठौषधि, वायुमंडल परिशोधन, छांह, भू सरंक्षण, पक्षी-बिहार, कीट-निवास और 'परोपकाराय सतां विभूतयः' का पाठ ही नहीं पद्धति वरन नव सृजन का मार्ग भी दिखाती हो। प्रणाम देवी। बारंबार प्रणाम।

अक्षय औषधीय भंडार

समस्त आयुर्वेद, अधिकांश होम्योपैथी, असाध्य बीमारियों के लिए नित नए औषधि द्रव्यों के लिए हम पौधों पर आश्रित है। हृदय रोग के लिए अर्जुन, डायबिटीज के लिए जामुन, गुड़मार, बेल, मेथी आदि, कैंसर के लिए सदाबहार, चिकनाई दोष में गुग्गुल की उपयोगिता सर्वविदित है।

भोजन प्रदान करना–मनुष्य जाति शाकाहार पर अवलंबित है। 'शाकाहार सर्वोत्तम आहार'।

अपने आगोश में आने वाले को शांति प्रदान करना – 'सुनहि बिनय मम बिटप असोका, सत्य नाम करू हरु मम सोका। (तुलसीदास, रामचरित मानस, सुंदरकांड, दोहा 11, चौपाई 10)।

सदियों से कहावतों में पौधे

पौधे लोकोक्तियों और सुभाषितों के प्रेरणा केंद्र रहे हैं। जैसे 'आपन ढेड़र न देखई, दूसर करि फूल निहारई' अपनी आंख में निकले हुए मांस के लोथड़े (ढेड़र) को नहीं देखता,पर दूसरे की आंख में छोटे से तिल की बुराई में संलिप्त रहता है, 'रूप-यौवन-संपन्नाः विशाल-कुल-संभवाः। विद्याहीनाः न शोभंते निर्गन्धाः इव किंशुकाः॥ रूप एवं यौवन से संपन्न, प्रसिद्ध कुल में जन्मा हुआ भी विद्याहीन पुरुष, गंधविहीन ढाक के फूल के समान शोभित नहीं कहा जाता। गोस्वामी तुलसीदास का यह दोहा उपकारी व्यक्तियों का स्वभाव फलों के भार से झुके हुए वृक्षों के समान बताता है : फल भारन नमि बिटप सब रहे भूमि निअराइ,पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसंपति पाई। श्रीरामचरितमानस, अरण्य कांड, दोहा 40)। तुलसी एक बार पुनः पौधों के गुणों से मनुष्यों की प्रकृति की तुलना करते हुए कहते हैं : संसार महं पुरुष त्रिबिध पाटल रसाल पनस समा॥

एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागहीं। एक कहहिं कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न बागहीं॥ (श्रीरामचरित मानस, उत्तरकांड) मनुष्य तीन प्रकार के होते हैं जैसे गुलाब,आम और कटहल। जैसे गुलाब केवल फूल देता है,आम फूल और फल दोनों प्रदान करता है और कटहल केवल फल देता है। वैसे ही कुछ मनुष्य केवल कहते हैं,करते कुछ नहीं,दुसरे प्रकार के लोग कहते और करते हैं तथा तीसरे प्रकार के मनुष्य केवल करते हैं,कहते कुछ नहीं। वृक्षों पर आधारित लोकोक्ति का एक और सुंदर उदाहरण 'कठवैद सम': कठजामुन कठबेल कछु कठगूलर की खानि, कठगुलाब कठवैद सम जान माल की हानि।

जिस प्रकार मानव समुदाय में कुछ औसत से बड़े, कुछ छोटे, कुछ गुणज्ञ तो कुछ गुणहीन या नुकसान पहुंचने वाले लोग होते हैं,उसी प्रकार वनस्पति जगत में भी एक ही प्रजाति के कुछ पौधे लंबे तो कुछ ठिगने,कुछ सुस्वादु तो कुछ तीखे,कुछ औषधीय दृष्टि से परिपूर्ण तो कुछ कम गुणकारी या बिल्कुल बेकार होते हैं। यह बहुत कुछ बीज,जलवायु,मौसम तथा मिट्टी की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। एक बानगी देखिए :

कठजामुन -छोटी जाति का जामुन फल है,जो खाने में खट्टा और बड़ी गुठली वाला होता है,परंतु इसका औषधीय गुण कुछ कम होता है। कठबेल मतलब कैथा बेल मीठा और औषधीय गुणों से भरपूर होता है,पर कैथा उतना ही कसैला। कठगूलर-छोटी प्रजाति का गूलर जो डायबिटीज में उपयोगी होता है। कठगुलाब-जंगली गुलाब कम सुगंध और कांटेदार होता है। कठवैद- 'नीम हकीम खतरे जान' वाली बात। ऐसे लोग जिन्हें औषधि विज्ञान का छिछला ज्ञान होता है,पर वे अपने आपको वैदराज,डॉक्टर या हकीम कहते हैं। ये आपके प्राण और धन दोनों हरते हैं। इनके लिए किसी ने ठीक ही कहा है- 'यमस्तु हरते प्राण। न वैद्यो प्राण धनानि च'। इसी प्रकार इस संसार में सब प्रकार के प्राणी है-कठजामुन,कठबेल,कठगूलर,कठगुलाब और कठवैद। चुनना आपको है। सच समझिए नकली से बचिए। वृक्षों के गुणों से संबंधित एक और मुहावरा का जायज लीजिए: 'जैसी बहै बयार पीठ तब तैसी कीजै-गिरधर'-वृक्ष कभी अंधड़ टी सुनामी के प्रतिकूल नहीं जाते।

दान/ परोपकार का भाव

चिकित्सकीय दृष्टि से वृक्ष-पादपों को ऑक्सीजन प्रदायक, प्राणरक्षक, शक्तिवर्धक, इम्यून शक्ति बढ़ने वाली औषधियों का भंडार माना गया है। पौधे मानव जगत को प्राणवायु देते हैं और बदले में उनका उत्सर्ज ग्रहण करते हैं। अपना वल्कल तक उतारकर सहर्ष धरती मां को भेंट कर देते हैं- उदाहरणार्थ-अर्जुन और चीड़ का वृक्ष। इनके अतिरिक्त आम का अपने आप गिरना,महुए का चूना। सुवासित वृक्षों के पराग का दूर-दूर तक जाकर छिटकना प्रकृति लीला की सामान्य घटना मानकर जिंदगी के प्रवाह में हम सब बहते जाते हैं और समय का कालचक्र भी अपनी गति से घूमता जाता है। एक दिन सबेरे घूमने के समय गूलर के दो पेड़ों के नीचे पृथ्वी पर गिरे असंख्य पके हुए गूलरों की दशा देखकर प्रकृति की उदारता और भौतिक रूप की नश्वरता पर मेरा माथा ठनक गया। गूलर ने अपने पके हुए फलों को बिना किसी शोर शराबे के पृथ्वी मां को समर्पित कर दिए,परंतु उन पके हुए फलों का कोई पूछनहार नहीं था। पैदल चलने वाले अनजाने में उन्हें अपने पैरों से रौंद कर आगे निकल जाते। उनमें से अधिकांश पिच्ची हो गए थे,जो पैर के नीचे दबने से बच गए थे वे भूलुंठित मलिन अवस्था में थे। अपनी अंतिम यात्रा पर थे। यही हाल थोड़ी दूर पर खड़े बेर के वृक्षों की थी। डाली से टूटकर बेर धरती पर छिटके-हारे, रूखे-सूखे धूल धूसरित बिखरे पड़े थे। उनकी कोई सुध लेने वाला नहीं था। लगता था वे भी थोड़े दिनों बाद वल्कलहीन होकर सूखकर अपना प्राण त्याग देंगे। उनकी गुठलियों से फिर एक नए बेर का प्रादुर्भाव होगा और वंश को अक्षुण्ण रखेगा।

भूलुंठित गूलर और धूल धूसरित बेर हम चिकित्सकों को क्या संदेश देते हैं? ये हमें बताते हैं अंतिम दम तक अपनी मधुरता, सौम्यता, उपयोगिता और उत्पादकता बनाए रखनी चाहिए चाहे जितनी मुसीबतें क्यों न आएं? एक चिकित्सक के अंदर जो सिफा है,गुण है कौशलता है,उसे हमेशा बनाए रखना चाहिए। अगर हमने अपने कौशल,विद्या,तकनीक और विधा को छोड़ दिया तो हम कहीं के न रहेंगे और हमारी शिष्य परंपरा भी नष्ट हो जाएगी। हमें इस बात की कोई चिंता नहीं करनी चाहिए की समाज हमें कौन सा स्थान दे रहा है। चिकित्सक का स्थान प्रकृति ने पहले से ही सुरक्षित कर रख है,वह मिलेगा ही मिलेगा।

जिज्ञासा और शोध के प्रेरणा केंद्र

वृक्ष वैज्ञानिकों के लिए खोज और प्रेरणा के केंद्र रहें हैं। उदाहरण–न्यूटन द्वारा सेब को गिरता देखकर गुरुत्वाकर्षण की सोच, छुईमुई को देखकर पौधों में जीवन है श्रीयुत जगदीश चंद्र बसु का पौधों में जान होती है,ऐसी अवधारणा। न्यूटन के पहले वाल्मीकि, कालिदास और तुलसीदास ने अपने ग्रंथों में 'वृक्षों में प्राण होता है' ऐसे कई प्रसंग लिखे हैं। पौधे बात कर सकते हैं ऐसी अभिव्यक्ति हम उनकी रचनाओं में प्राप्त कर सकते हैं। चिकित्सक पौधों से घाव भरने की प्रक्रिया सीख सकते हैं –ऐसा कहना है सुप्रसिद्ध स्विस चिकित्सक और भेषज विज्ञानी पैरासेल्सस (1493–1541) महोदय का– 'उपचार की कला चिकित्सक से नहीं प्रकृति से आती है। इसलिए चिकित्सक को खुले दिमाग से प्रकृति से शुरुआत करनी चाहिए'। वृक्ष अपने ऊपर हुए चोट–चपेट और घाव को झेलने के बाद उससे किस प्रकार निपटते हैं, अपने घाव को किस प्रकार भरते हैं वह चिकित्सकों के लिए बहुत कुछ सिखाता है। इसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे तब हुआ जब मैं अपने गुरु प्रोफेसर तुली के घर पर पहुंचा,उन्होंने अपने घर की चहारदीवारी के पास एक बड़े पेड़ को दिखाते हुए बताया कि इस पेड़ को खतरनाक रूप से चहारदीवारी की तरफ झुकने से बचाने के लिए उन्होंने इसके सशक्त तने के चारों तरफ एक तार लपेटकर घर की तरफ एक मजबूत खूंटे से बांध दिया। कुछ महीनों बाद उस तार के चारों ओर तने के आसपास की इपीथियल कोषाओं ने घेर लिया और पूरी तरह से तार को ढककर अपने में आत्मसात कर लिया। डाक्टर तुली ने मुझे यह भी समझाया कि हमारे शरीर में भी घाव भरने–पूजने की यही प्रक्रिया संपन्न होती है। जड़ सा दिखने वाला यह पेड़ अपने घाव को भरने के प्रति कितना सचेतन और सक्रिय होता है। यह मैंने प्रत्यक्ष देखा और सीखा। प्रकृति के अनूठे संसार में हमें कभी–कभी ऐसे उदाहरण मिलते हैं,जो हमारे शरीर के विभिन्न भागों से मिलते–जुलते दृश्य प्रदान करते हैं। वृक्ष के विविध अंग (पत्ते, फूल, फल) अपने स्वरूप से मानव शरीर के विविध अंगों से साम्यता दर्शाते हैं जैसे पीपल के नव किसलय पत्र हृदय के आकार से मिलते–जुलते हैं : अश्वस्थ पत्र सा रक्तवर्ण, वाहिनियों से परिपूर्ण पर्ण, बहता रग–रग में क्षीर तोय, ऐसा है अपना हृदय–पर्ण। ये पत्ते मानव हृदय के समान लोहित वर्ण के वाहिनियों से उसी प्रकार परिपूर्ण होते हैं,जैसे मानव हृदय धमनियों ,शिराओं और तांत्रिकाओं से भरपूर रहता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी हृदय नलिकाओं को कोलेस्टेरॉल के कचरे ,ताव–तनाव से क्षत–विक्षत तथा धूम्रपान–तंबाकू से प्रदूषित न कर दें। अश्वस्थ के नव किसलय हमें यही संदेश दे रहें हैं। पीपल का कोमल हृदयाकार पत्ता मानव हृदय का बाह्य स्वरूप ज्ञान के प्रतीक –जैसे बरगद का पेड़ (श्रीमद्भगवद्गीता/इलाहाबाद विश्वविद्यालय का लोगो चिन्ह)।

जड़ों को मजबूत और घना रखने की आवश्यकता पर बल

जड़ों में दीमक न लगने दें। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमने अपनी हाल की बनारस यात्रा में प्राचीन बनकटी हनुमान मंदिर के प्रांगण में देखा। एक बात जिसने मुझे बहुत आश्चर्यचकित किया। वह था मंदिर परिसर में स्थित विशाल पीपल के पेड़ की अनुपस्थिति। उसके स्थान पर एक नवजात पीपल का पौधा लगाया हुआ था। पुजारी जी से पूछने पर पता चला कि पुराने विशालकाय पीपल के वृक्ष को अंदर ही अंदर दीमक चाट गई। इतने बड़े पीपल का दीमक द्वारा सर्वनाश मन को हिल देने वाली बात थी। यह कुछ उसी प्रकार की दुर्घटना थी,जिस प्रकार मोटापा, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, हृदयाघात और कैंसर मनुष्य को अंदर ही अंदर जर्जर कर देती है। अस्वस्थ अश्वस्थ हमें यही शिक्षा दे रहा था।

आपदा को सहने की शिक्षा

भयंकर शीत, प्रचंड गर्मी, धुआंधार वर्षा और अंधड़ के बीच हम अपने को कैसे सुरक्षित रह सकते हैं,यह उनसे सीखें। अनुकूलन क्षमता कोई इनसे सीखे।

प्रदूषण दूर करने की क्षमता–वृक्ष प्रदूषण की मार, धूल–धक्कड़ और शोर–शराबे को अपने ऊपर झेल लेते हैं। एक शोध अध्ययन के अनुसार जो लोग हरियाली, बाग बगीचे, पार्क के निकट रहते हैं,वे दीर्घायु होते हैं। ऐसे लोगों को ब्लड प्रेशर और हृदय की बीमारियां कम होती हैं। हरीतिमा और फूलों की आभा नेत्रों से मस्तिष्क के नेत्र क्षेत्र से होकर प्रमस्तिष्क क्षेत्र में हाइपोथैलेमस और फिर आटोनॉमिक तंत्रिकाओं के माध्यम से हृदय को प्रसन्नचित्त रखती है।

सबको छांह और शरण देना

असंख्य कीट, जीव को अपने आगोश में रखना। कोयल अपने अंडे पेड़ों के कोटरों में ही देती है। भले ही सयाना कौआ उसे उठा ले जाए। व्यंग्य–बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।

अपनी संतति को आगे बढ़ाना– आम आम को ही जन्म देता है बबूल नहीं।

जल चक्र को बनाए रखना–प्रकृति से तालमेल बनाए रखना।

ऋतु चक्र का पालन–मनुष्य को भी ऋतु–काल के अनुसार अपनी दिनचर्या रखनी चाहिए।

ऋतु में ही फूलना– फलना। सुकवि बिहारी का सुप्रसिद्ध दोहा– नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल। अलि कली ही सौ विंध्यों आगे कौन हवाल।।

संवाद और संपर्क

जड़ों के माध्यम से या सुविस्तृत शाखों या स्कंधों के माध्यम से गलबहियां करते वृक्ष। आधुनिक विज्ञान में वृक्षों की जड़ों को परस्पर कवक कोशिकाओं के माध्यम से वार्ता करते बताया गया है। ये परस्पर संवाद करते हैं,पर आश्चर्यजनक बात यह है कि ये संवेदनशील मनुष्यों से भी वार्तालाप करते हैं। सीताहरण के पश्चात राम पंचवटी में अपने आश्रम के निकट सभी वृक्षों से आर्त भाव से पूछते हैं कि क्या तुमने सीता को कहीं देखा है-पूछत चले लता तरु पाती (रामचरितमानस, अरण्यकांड, दोहा 29 ख / चौपाई 8)। मेरे अपने चिकित्सकीय अनुभव में 1956 के आसपास की बात है कि लखनऊ स्थित प्रसिद्ध के जीएमसी मेडिकल कॉलेज के तत्कालीन सर्जरी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर एससी मिश्र के विषय में सुप्रसिद्ध था कि वह प्रायः अपने बगीचे में जाकर घंटों वृक्षों से बातें करते और बड़े गर्व से कहते की ये वृक्ष ही मेरी संतानें हैं। कुलीनता और प्रशांतता कोई इनसे सीखें।
परिस्थिति वश एकांतता स्वीकार करने की इनकी वृत्ति मानव जाति के लिए स्पृहणीय होती है जैसे मरुस्थल में खजूर के पेड़।

स्नेह-सौंदर्य के प्रतीक

महाकवि कालिदास ने 66 प्रजातियों के वृक्षों के सौंदर्य का अद्भुत वर्णन किया है। महाकवि वाल्मीकि और तुलसीदास ने भी अनेक वृक्षों के अनुपम सौंदर्य,सुरम्यता,कोमलता,सुगंध और स्नेहिल ऊष्मा का बखान किया है। उनसे मानव समाज को प्रेरणा लेने की सीख दी है। पलाश के शोख लाल फूलों का वर्णन करते हुए कालिदास कहते हैं: उपहितम शिशिरापगमश्रिया मुकुलजालम शोभत किंशुके। प्रणयिनीव नख क्षत मंडन प्रमदया मदयार्पित लज्जया।। (-रघुवंश 9.31)। इसी प्रकार अर्जुन वृक्ष के सौंदर्य की प्रशंसा करते हुए महाकवि कालिदास लिखते हैं: आपिज्जरा बद्धरजः कणत्वान्मन्जर्युदाराशुशुभेर्जुनस्य। दग्ध्वापि देहम् गिरिशेन रोषात्खंडी कृता ज्येव मनो भवस्य। रघुवंश 16.51। पराग से भरी कुछ पीली-पीली अर्जुन मंजरी ऐसी लगती थी मानो कामदेव का शरीर भस्म करने के पश्चात शिवजी के हाथ से तोड़ी हुई कामदेव के धनुष की डोरी। एक और दर्शनीय तुलना का आनंद लीजिए: अशोक वन में रावण मत सीता के समक्ष अनेक प्रलोभन रखता है। सीता-राम को सूर्य के समान, अपने को नलिनी पुष्प की भांति तथा रावण को जुगनू की भांति बताती हैं। महाकवि तुलसी इस वार्ता को बहुत ही सुंदर तरीके से करते हैं: सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा। कबहुं कि नलिनी करइ बिकासा।। (रामचरितमानस ,सुंदरकांड ,दोहा 8/ चौपाई 7)

प्रकाशोन्मुख होने का भाव

पौधे प्रकाश की तरफ अग्रसर होते हैं। सूरजमुखी इस तथ्य का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। सूरजमुखी की तरह घंटाफूल का पौधा भी प्रकाश की ओर बढ़ता है, स्पर्श और आरोहण का संबल ढूंढता है। कहते हैं न 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'।

ईश्वर को अर्पित करने की इच्छा

फूल,पत्ते,तने,जड़ें सब ईश्वर के चरणों में अर्पित होने की सदिच्छा रखती है। भगवान शिव को बेलपत्र,शालीग्राम को तुलसीदल, गणेशजी को दूर्वा,लक्ष्मीजी को कमल,दुर्गाजी को नारियल, भगवान विष्णु को कदलीदल और समस्त देवतागण नैसर्गिक पुष्प पसंद करते हैं। संक्षेप में मौन और स्थिर से दिखने वाले पेड़-पौधे हमें कितनी बहुमूल्य शिक्षा प्रदान करते हैं। अपना सर्वस्व हमें भेंट कर देते हैं। इनकी रक्षा करना, संवर्धन करना हमारा पुनीत कर्तव्य है। भूलकर भी उन्हें आहत न करें। दुख न पहुंचाएं। उनकी रक्षा करके हम मानव जाति को प्रदूषण और वैश्विक ऊष्मा के मारक प्रभावों से बचा सकते हैं। यह हमारे अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक होगा।

व्यंग्य

नेता पुराण

नेता अंदर से टूटा हुआ और बाहर से इस्पात का बना होता है। चुनाव-दर-चुनाव वह हारता है,लेकिन हार नहीं मानता। धूल झाड़कर फिर खड़ा हो जाता है। पता नहीं यह साहस उसे कहां से मिलता है। चुनाव लड़ने वाले किसी भी नेता से पूछिए-इस चुनाव में क्या होगा? हार होगी या जीत। उसका तपाक से उत्तर होगा- मैं रिकॉर्ड मतों से जीत रहा हूं। कोई भी नेता हार मानने के लिए तैयार नहीं होता। यह उसका अति आत्मविश्वास बोलता है। चुनाव के समय उसमें गजब की चुस्ती और फुर्ती दिखाई देती है। एक महीने का श्रमदान पांच साल के लिए आराम का रास्ता खोल देता है। यह अद्भुत पराक्रम जनता के वोट में निहित होता है।

रमेश चन्द्र द्विवेदी
पूर्व प्रधानाचार्य, नैनीताल

भाषण देने की कला में उसे महारत हासिल होती है। पढ़े-लिखे लोग भी उसके सामने फेल हो जाते हैं। नेता बनने के लिए किसी डिग्री की आवश्यकता नहीं होती। अंगूठा छाप आदमी भी नेता बन सकता है। बेरोजगारी का संकट देखते हुए यह रोजगार का उत्तम माध्यम है,लेकिन सभी की कुंडली में राजसी सुख कहां लिखा होता है। बस एक बार विधायक या सांसद बन जाएं,फिर क्या सारी सुख सुविधाएं पेंशन सहित टेंशन फ्री मिलती हैं। आम आदमी से उठकर वह माननीय हो जाता है और आम आदमी वहीं का वहीं रह जाता है। रोब, रुतबा, दौलत जनता से पाकर वह अधिकार संपन्न हो जाता है। 'नोटा' का सोटा भोथरा हो जाता है।

पैसा आता-जाता कहां से है? यह नेता को मालूम है। कमीशन क्या होता है? उसकी सारी तरकीब उसे मालूम होती है। वह रेत में एड़ियां रगड़ करके भी पानी निकालना जानता है। जनता से वादा करना और भूल जाना नेता की आदत में शुमार होती है। चुनाव से पहले वह राग छेड़ता है-कसमें-वादे निभाएंगे हम। चुनाव के बाद आप पूछो कि आपके वादों का क्या हुआ? तो जबाब मिलता है-कागजी थे हवा हो गए। घोषणाएं करना और उस पर अमल न करना लोकतंत्र के लिए नासूर बन जाता है। चुनाव आते ही घोषणा रूपी भानुमती का पिटारा खुल जाता है। यह घोषणा पत्र वैसे ही बाहर निकल कर आता है जैसे बारिश की पहली फुहार पाते ही धरती के गर्भ में सोए हुए मेंढक बाहर आ जाते हैं। घोषणा पत्र पर याद आया उत्तर प्रदेश के एक पूर्व मुख्यमंत्री का नाम भी विरोधी दलों ने घोषणा नाथ कर दिया था।

घोषणा पत्र पर पांच साल तक इस कोई चर्चा नहीं होती है। पांच साल के लिए फिर ठंडे बस्ते में बंद हो जाता है। इसके नामों की फेहरिस्त भी बड़ी लंबी है। संकल्प पत्र, न्याय पत्र,अधिकार पत्र और न जाने क्या-क्या? लोकतंत्र की गाड़ी वोट से चलती है। घोषणा पत्र में ऐसे वादों का समावेश किया जाता है कि जनता सुनकर बाग-बाग हो जाए और अपना सारा वोट उनकी झोली में डाल दे। एक पार्टी ने घोषणा की-वह प्रत्येक महिला को एक लाख रुपए देगी। उसने यह भी नहीं सोचा कि यदि महिलाओं की आबादी साठ करोड़ है तो साठ खरब रुपए कहां से आएंगे। फ्री का चस्का लोकतंत्र के लिए मीठा जहर है।

नेता भीतर से कभी नहीं टूटता। उसके फौलादी इरादे लोकतंत्र की नींव रखते हैं। जनता का पैसा जनता के लिए न होकर नेता की थाती बन जाती है। उनके सुख-सुविधा का खास ध्यान रखा जाता है। जेल जाना नेता के लिए कोई अकल्पनीय घटना नहीं है,लेकिन जेल में राजसी सुविधाएं लेना उसका अधिकार है। घपला-घोटाला करना उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। भ्रष्टाचार की गंगोत्री में डुबकी लगाना साधना है। एक अनार सौ बीमार की तर्ज पर हर व्यक्ति नेता तो नहीं बन सकता,जो बन गया है उसकी पौ बारह। नेता का काम रोटी से खेलना है। 'संसद से सड़क तक' में लिखी धूमिल की कविता अक्षरसः सत्य प्रतीत होती है।

नेता बनाने के लिए न कोई फैक्ट्री है न कोई स्कूल। झंडा-डंडा, आंदोलन,धरना,प्रदर्शन पुलिस की लाठी-गोली और जेल यह इसकी आवश्यक शर्त है। नेता बनने के लिए जमा पूंजी की भी आवश्यकता नहीं है। यह फायदे का सौदा है। हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा का चोखा। भ्रष्टाचार की गंगोत्री में आकंठ डूबे नेता सुरक्षित रास्ता खोज ही लेते हैं। चुनाव लड़ने के लिए पैसा चाहिए। इलेक्टोरल बांड चंदा उगाही नया विकल्प है। इसे आप रिश्वत भी नहीं कह सकते। चंदा का धंधा बहुत पुराना है। पहले मेज के नीचे से आता था अब मेज के ऊपर रख दिया जाता है। तो कहिए आपका क्या ख्याल है! नेता बनने के लिए प्रयास शुरू कर दीजिए।

कविता

डरा हुआ शहर

हम बचे हुए लोग हैं
हमारे पास है एक डरा हुआ शहर
सच से डरा हुआ
जो बार–बार दुहराए झूठ से बना है
विश्वास से डरा हुआ
जो है अपहरणकर्ताओं के कब्जे में
ईमानदारी से डरा हुआ
जो कर देती है बहुत अकेला
प्रेम से डरा हुआ
जो है कुछ क्षणों का उत्सव।
बहुत कुछ नहीं है पहले सा
जैसे गंगा
जो तटों के आलिंगन में बहती थी शांत
हवा भी नहीं है पहले सी
जिसमें खुलकर सांस लेते थे
पहले सा चलना फिरना नहीं है
जिसमें बेफिक्री थी।
अब नींद में भी घेरता है
एक विकट उल्लास
और असहाय हाहाकार
किसी पुल से गुजरते हुए लगता है
पता नहीं यह कब गिर पड़ेगा अचानक।
हम बचे हुए लोग इतना डरे हुए हैं
कि अर्घ्य के समय
भोर का सूरज दिखता है
प्यासे आसमान में
खून की एक बड़ी सी बूंद

शंभुनाथ
सेवानिवृत प्रोफेसर, कोलकाता

गजल

जैसों की सोहबत होती है,
वैसी ही फितरत होती है।

जिसने समझी जिम्मेदारी,
उसको कब फुर्सत होती है।

नाकारा को क्या समझाना,
वक्त की क्या कीमत होती है।

तेरे आ जाने भर से ही,
इस दिल को राहत होती है।

दौलत शोहरत इज्जत रुतबा,
इंसानी हसरत होती है।

तय करती है घर की अस्मत,
कहने को औरत होती है।

प्यार जहां है पाया जाता,
'ज्ञान' वहां बरकत होती है।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'
शाहजहांपुर

कहानी

असली मर्द कौन

शाम के 8 बज चुके थे। राधिका जब रेलवे प्लेटफार्म पर पहुंची तो ट्रेन छूटने ही वाली थी। हड़बड़ाहट में वह अपने बैग को संभालती हुई सामने वाले डिब्बे में ही चढ़ गई। उसी समय ट्रेन भी अपने गंतव्य स्थान की ओर चल पड़ी,यह देखकर राधिका ने चैन की सांस ली और बैठने के लिए उपयुक्त सीट की खोज में इधर-उधर अपनी नजरें घुमाईं तो उसने देखा कि डिब्बे में सभी सवारियां मर्दों की थीं। एक अनचाहा भय उसे हवा के झोंके की तरह छूते हुए चला गया। किसी तरह से हिम्मत जुटाकर वह आगे बढ़ी तो उसे सीट मिल गई। उसने जल्दी से अपनी बैग को सीट के नीचे सरकाया और फिर खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गई, जिस सीट पर वह बैठी थी वह पूरी खाली थी। सामने वाली सीट पर 3 अधेड़ उम्र के पुरुष बैठे हुए थे,जो अपने-अपने मोबाइल में कुछ देखने का प्रयास कर रहे थे। राधिका ने एक उचटती सी नजर उन पर डाली और फिर खिड़की से बाहर के दृश्य देखने लगी।

विनोद कुमार डबराल
बरेली

आधे घंटे बाद जब ट्रेन रुकी तो तीन नौजवान लड़के डिब्बे में चढ़कर राधिका के बगल वाली खाली सीट पर बैठ गए। थोड़ी देर बाद ट्रेन चल पड़ी और राधिका फिर से बाहर के दृश्य देखने में व्यस्त हो गई,उसकी बगल में बैठे लड़के भी अपने-अपने मोबाइल निकालकर चलाने लगे। थोड़ी देर बाद जब ट्रेन रुकी तो डिब्बे में चार मौसियां चढ़कर तालियां बजाने लगीं,उन्हें देखकर डिब्बे में मौजूद सभी मर्द मुस्कराने लगे। कुछ देर बाद ही उन्होंने डिब्बे में घूम-घूम कर वसूली करनी शुरु कर दी।

अचानक राधिका ने महसूस किया कि उसके बगल में बैठे लड़के का हाथ धीरे-धीरे उसकी टांगों की ओर बढ़ रहा था और उसके बाकी दोनों साथी मुस्कराते हुए उसे देख रहे थे। यह देखकर राधिका ने घूरकर लड़के की ओर देखा तो प्रत्युत्तर में लड़का मुस्कराकर बोला,''आप शायद अकेली सफर कर रही हैं?'' कहते-कहते लड़के ने बेशर्मी से उसकी टांग सहला दीं,अब तो राधिका गुस्से में खड़ी होते हुए बोली,"ऐ मिस्टर! अपनी हद में रहो वरना..." ''वरना... वरना क्या कर लोगी?''

लड़का भी अब खुलकर बेशर्मी पर उतर आया। राधिका भी लड़के के तेवर देखकर सहम गई,उसने कातर दृष्टि से अपने सामने बैठे पुरुषों की ओर देखा तो पाया कि वह सभी उसके साथ हुए दुर्व्यवहार से बेखबर होकर अभी भी अपने-अपने मोबाइल में खोए हुए थे। यह देखकर डर के मारे राधिका की चीख निकल गई, तभी बगल के कम्पार्टमेंट से एक मौसी दौड़ती हुई उसके पास पहुंची और राधिका के आगे खड़ी होते हुए लड़के से बोली, "क्या है रे छोरे! लगता है तुझे कुछ ज्यादा ही मस्ती चढ़ गई है?" हट्टे-कट्टे मौसी को देखकर पहले तो लड़का सहमा फिर अपने साथी लड़कों की शह पाकर बेशर्मी से हंसता हुआ बोला, "अरे मौसी! तू इन बातों को नहीं समझ पाएगी, जा जाकर नाच गाकर ताली बजाते हुए अपनी वसूली के धंधे को कर''। यह सुनकर राधिका के साथ खड़ी मौसी गुस्से से आगबबूला होते हुए चिल्ला पड़ी, ''अरी ओ कमला, बिट्टू, शर्मिला, जरा इधर तो आना, इन छोरों की जवानी का जूस निकालना है''।

पलक झपकते डिब्बे के दूसरी ओर से बाकी तीनों मौसियां भी वहां आ पहुंची। यह देखकर तीनों बेशर्म लड़कों की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। हड़बड़ाते हुए वह उठकर भागने लगे तो चारों मौसियों ने लपककर

उन्हें धर दबोचा और अपनी कांख में दबाते हुए बोले ''अभी तो तेरे अंदर की जवानी खौल रही थी, अब बोल, कहां जाकर दुबक गई तुम तीनों की''। शोर सुनकर बगल के डिब्बे में बैठे हुए पुलिस वाले भी वहां पहुंच चुके थे। सारा माजरा जानकर एक पुलिस वाला मौसियों से बोला,''तुमने बहुत अच्छा मर्दों वाला काम किया है। अब हम इन्हें सिखाएंगे कि किसी अकेली लड़की को छेड़ने पर क्या होता है"। फिर डिब्बे में मौजूद सभी मर्दों को झिड़कते हुए बोला,"शर्म आनी चाहिए तुम लोगों को, एक नारी को कुछ बेशर्म लड़के परेशान कर रहे हैं और तुम्हारी मर्दानगी नजरें चुराकर कहां भटक रही थी?'' यह सुनकर सभी पुरुषों ने शर्म से अपनी अपनी गर्दनें झुका लीं। थोड़ी देर बाद जब पुलिस वाले उन तीनों लड़कों को लेकर चली गई तो राधिका ने भावावेश में अपने पास खड़ी मौसी को गले लगा लिया। अगले स्टेशन पर जब राधिका ट्रेन से नीचे उतरकर प्लेटफार्म से बाहर की ओर जा रही थी तो उसके मन में रह रहकर एक सवाल गूंज रहा था कि डिब्बे में असली मर्द कौन था?

लघुकथा

सुनहरी आस

दसवीं का रिजल्ट घोषित हो गया था। जब संदीप के किसी मित्र ने उसे फोन कर बिटिया का रिजल्ट पूछा,तब व्यापार में डूबे संदीप को ध्यान आया कि बिटिया ने भी इस बार बोर्ड की परीक्षा दी है। 'ओह! रिजल्ट आ गया? मैं अभी बिजनेस के काम से आया हूं। नहीं देख पाया। उसी ने देखा होगा।'

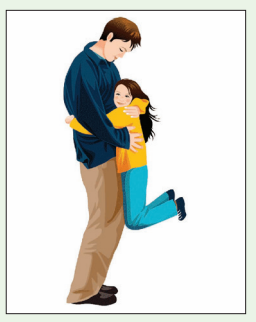

'अजीब बाप हो तुम।' कह कर मित्र ने फोन काट दिया। संदीप ने पत्नी को फोन मिलाया। पता चला कि बच्ची औसत अंकों से पास हुई है। तब संदीप को ध्यान आया कि बिटिया उसे अक्सर अपने स्कूल का काम और प्रोजेक्ट वर्क दिखाकर उसकी सराहना चाहती थी,पर वह हमेशा काम और थकान का बहाना कर बेटी को नजरअंदाज करता था। पत्नी ने उसे बिटिया को फोन करके बधाई देने को कहा। वह चाह तो रहा था,पर अपनी उस बिटिया से बात करने में हिचक रहा था,जो अब उससे घबराने लगी थी और दूरी बनाने लगी थी। आखिरकार उसे मित्र के शब्द याद आए कि अजीब बाप हो तुम। उसने हिम्मत जुटाकर बिटिया का नंबर मिलाया, 'बहुत बधाई राशि बेटा। छोटे-छोटे कदम बढ़ाकर तुमने लंबी छलांग लगा ली। ये कूद,ये उड़ान जारी रहे। तुम्हारे आगे खुला आसमान है।' 'थैंक यू पापा! आपसे यही सुनना चाहती थी। अब मैं और बेहतर करूंगी।' राशि के मन में खुशी की लहर सिसकियां ले रही थीं।

अमृता पांडे
लेखिका, हल्द्वानी

समीक्षा

रामलीला का अतीत बताती कृति

डॉ. रामानंद शुक्ल की पुस्तक 'अयोध्या की रामलीला' मूलतः रामलीला के इतिहास और वर्तमान में रामलीला-मंचन की विशिष्टता एवं प्रस्तुति की दृष्टि से महत्वपूर्ण कृति है। यह पुस्तक बीस लेखों का संकलन है जिसमें रामलीला की उपजीव्यता, उसका उद्भव और विकास, अयोध्या की रामलीला का अतीत और वर्तमान, रामलीला का विश्वव्यापी रूप, अयोध्या की रामलीला कमेटियां तथा उनकी प्रस्तुति विषयक विशेषताएं आदि प्रमुख हैं।

अयोध्या इक्ष्वाकुवंशी राजाओं की राजधानी है,परंतु मानवोत्तम श्रीराम यद्यपि मर्यादापूर्ण एवं लोकरक्षण के आदि नायक हैं। अतः उनके अवतार से जन्म लेने और किशोरवय से योद्धा रूप- श्रीराम,जो शील सम्पन्न और करुणानिधान हैं,वे अहैतुकी-कृपा करते हैं,का भावपूर्ण एवं भक्तिपूर्ण विवेचन है। अयोध्या की रामलीलाओं में नायक श्रीराम की लीलाओं से आरंभ होकर उनके राज्याभिषेक तक का क्रमिक नाट्य विधा के मानकों के आधार पर प्रस्तुतीकरण होता है। मंचन की संवाद-योजना का आधार रामचरितमानस के मंगलाचरण से दोहा-सोरठा और चौपाइयां हैं। लेखक के अनुसार संपूर्ण अयोध्या नगरी में वर्षों पूर्व से कई स्थानों पर रामलीला होती आ रही हैं।

शासन द्वारा अयोध्या शोध संस्थान में कोरोना काल को छोड़ लंबे समय से विभिन्न राज्यों में खेली जाने वाली रामलीला का मंचन बहुचर्चित है। अयोध्या शोध संस्थान द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायता से प्रकाशित डॉ.रामानंद की यह पुस्तक पढ़ने के उपरांत यह कहना बनता है कि अब तक की रामलीला केंद्रित किताबों में यह अपनी शोधपरकता, विशुद्ध तत्सम भाषाशैली और अयोध्या की रामलीलाओं के मंचन के समय की तस्वीरों के संकलन की दृष्टि से पठनीय है।

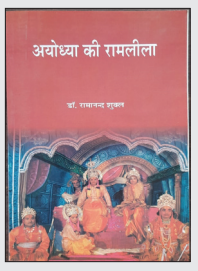

पुस्तक –अयोध्या की रामलीला
लेखक – डॉ. रामानंद शुक्ल
प्रकाशक – भवदीय प्रकाशन।
मूल्य– रु.250
समीक्षक– संतोष कुमार तिवारी

घुमक्कड़ी

गाड़ी की सर्विसिंग के बहाने मटरगस्ती

एक दिन शहर जाना हुआ। गाड़ी की सर्विसिंग करानी थी। सर्विस सेंटर में काम करने वाले एक गोल घेरे में खड़े हुए सुबह की सभा जैसी कर रहे थे। क्रिकेट मैदान में खिलाड़ी मैच की शुरुआत में एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर टीम भावना का प्रदर्शन करते हुए खड़े होते हैं। बराबरी का मामला रहता है वहां। इसलिए गले मिलते हैं। यहां बॉस और अधीनस्थ का हिसाब था इसलिए एहतियातन इस तरह खड़े थे कि कहीं कोई किसी को छू न जाए। कोरोना का प्रोटोकाल चल रहा हो मानो। बॉस से सुरक्षित दूरी, है नौकरी के लिए जरूरी।

सर्विस वाले ने पटापट गाड़ी के ढेर सारे फोटो अपने टैब में ले डाले। गाड़ी भी नई मॉडल की तरह खड़े-खड़े पोज देती रही। फोटो देखने पर पता चला कि एक चिड़िया के पंख इंजन में फंसे हुए थे। शायद नीचे से घुसी होगी छिपने के लिए जब गाड़ी खड़ी रही होगी। फिर इंजन में फंस गई होगी। उसकी हड्डियां तक सूख गईं थीं। गाड़ी के सर्विसिंग में करीब तीन घंटे लगने थे। वहीं बैठे-बैठे इंतजार करने के बजाय मैंने सोचा मेट्रोबाजी की जाए। मोतीझील मेट्रो स्टेशन करीब डेढ़ किलोमीटर दूर था। चल दिए। पैदल।

एक साइकिल वाला साइकिल पर तीन गैस सिलेंडर लादे चला जा रहा था। सिलेंडर के वजन और चढ़ाई के कारण वह साइकिल पर एकदम झुककर,जोर लगाकर साइकिल खींच रहा था। सिलेंडर कैरियर पर जिस तरह रखे हुए थे उससे लगा कि विजय का उल्टा वाला निशान बना रहे हों। साइकिल सवार की असलियत बयान कर रहे हों। गूगल जो रास्ता बता रहा था हम उससे अलग दूसरी गली में मुड़ गए। यह वीरता दिखाते हुए हमको कानपुर के भगवती प्रसाद दीक्षित 'घोड़े वाले' की कही बात याद आई :"चलो न मिटते पद चिन्हों पर/ अपने रस्ते आप बनाओ।" अपने रास्ते पर जाने का फायदा भी हुआ। आगे हमको शानदार स्पोर्ट्स क्लब दिखा। यह हमने पहली बार देखा था। तमाम खेल की ट्रेनिंग का जिक्र था। कई गेट दिखे। विवरण पता करने पर दरबान ने बताया कि उसको कुछ पता नहीं क्लब के बारे में,उसको तो बस चौकीदारी से मतलब। दुनिया के तमाम चौकीदार ऐसे ही बिना कुछ जाने तमाम पैसे वालों के दिहाड़ी के नौकर बने हुए हैं।

मेट्रो स्टेशन पर भीड़ बिल्कुल नहीं थी। अपन अकेले टिकट लेने वाले। तीस रुपये का टिकट मोतीझील से आई.आई.टी. तक का। काउंटर बालिका हमको टिकट देकर वापस 'मोबाइल समुद्र' में गोता लगाने लगी। सुरक्षा से गुजरकर स्टेशन पर आए। कुछ देर में मेट्रो भी आ गई। बैठ गए। चल दी मेट्रो। मेट्रो में कुल जमा तीन यात्री थे। ट्रेन चली भी नहीं थी कि अगला स्टापेज आ गया। गाड़ी कुछ देर खड़ी रही। फिर चल दी।

ट्रेन की खिड़की से शहर का नजारा देखते रहे। एक जगह खूबसूरत मंदिरनुमा आकृति वाली इमारत दिखी। हमने सोचा कि यह मंदिर कब बना? बाद में पता चला कि यह तो अपना जे.के.मंदिर है। तमाम छतों पर सोलर पैनल दिखे एंटीना की तरह।

आई.आई.टी. स्टेशन पर मेट्रो रुकी तो हम उतरे। लिफ्ट से। साथ में ट्रेन की ड्राइवर बालिका थी। एक छुटका सा सूटकेस लिए वह नीचे रेस्ट रूम में जा रही थी। बताया उसने की चालीस मिनट का रेस्ट मिलता है हर ट्रिप के बाद। उतनी देर वह सुस्ता लेती है। ट्रेन में भीड़ नहीं है के जवाब में उसने बताया कि जब सेंट्रल तक जाने लगेगी मेट्रो तब यात्री बढ़ेंगे। स्टेशन पर उतरकर एक दुकान पर बैठकर लस्सी पी। वापसी में देखा कि एस्केलेटर बंद था। सूचना लगी थी बिजली बचाने के लिए एस्केलेटर बंद है। सीढ़ियों से या लिफ्ट से जाएं। हमको लगा कि कहीं मेट्रो वाले अपने स्टेशन पर न लिख दें-'बिजली की खपत कम करने के लिए मेट्रो सेवाएं स्थगित हैं। आप कृपया आटो/ओला/उबर से निकल लें।'

अनूप शुक्ल
कानपुर

ट्रेन में बैठते हुए देखा वही बालिका मेट्रो ड्राइवर अपना सूटकेस लुढ़काते हुए इंजन की तरफ चली जा रही थी। इस बार ट्रेन में थोड़े यात्री थे। मोतीझील स्टेशन पर उतरे तो यहां भी बिजली की बचत के चलते स्वचालित सीढ़ियां बंद थीं। लिफ्ट की तरफ बढ़े तो लिफ्ट में वही दो बच्चियां दिखीं जो मेट्रो में मिली थीं। लिफ्ट चलने वाली थी। हमको लिफ्ट की तरफ आता देखकर एक बच्ची ने अपना हाथ लिफ्ट के बाहर कर दिया। ऐसा लगा मानो लिफ्ट के बाहर खड़े इंसान से हाथ मिलाने का आह्वान कर रही हो। लिफ्ट उसके हाथ बाहर करते ही थम गई। हम लिफ्टायमान हुए। लिफ्ट चलने के पहले हमने बच्ची को धन्यवाद बोल दिया।

लिफ्ट में कोरोना काल के अवशेष के रूप में केवल दो व्यक्तियों के खड़े होने के लिए चौकोर खाने बने हुए थे। बहुत दिन लगेंगे उन यादों को बिसराने में। स्टेशन पर किताबों की दुकान है। वहां रखी किताबों को देखते हुए वापस चल दिए। पैदल ही। रास्ते में एक मुल्लाजी का जनरल स्टोर दिखा। बोर्ड के ऊपर 'अमूल गाय दूध' भी लिखा था। दुकान पर मौजूद बच्चे ने बताया-'यह नाम लोगों ने दिया है। इसलिए बोर्ड भी उसी तरह का लगा।' सर्विस सेंटर पहुंचकर पता चला कि गाड़ी की सर्विसिंग हो गई है। अपन भुगतान करके, गाड़ी उठाकर घर आ गए। गाड़ी की सर्विसिंग के बहाने रिटायरमेंट के बाद पहली मटरगस्ती हुई।

शख्सियत

दुर्लभ है चौथीराम बनना...

समाज के लिए ऐसा काम करना कि वह रहती दुनिया तक याद किया जाए और नाम अमर हो जाए,ऐसा बहुत कम लोग कर पाते हैं। ऐसा ही काम किया है विख्यात वरिष्ठ प्रगतिशील आलोचक प्रो. चौथीराम यादव जी ने 29 जनवरी 1941 को जौनपुर के शाहगंज तहसील के गांव कायमगंज डेहरी के एक किसान परिवार में जन्में चौथीराम चार भाइयों और एक बहन में सबसे छोटे थे। विवाह महादेवी जी से बचपन में हो गया था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव के पास विद्यालय में हुई। इंटरमीडिएट के बाद की शिक्षा बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी,बनारस में हुई। 1964-65 में यहां से बीए और फिर एम.ए. किया। दोनों फर्स्ट डिवीजन में पास कर डॉक्टर त्रिभुवन सिंह जी के निर्देशन में मध्यकालीन भक्ति साहित्य विषय पर पीएचडी की डिग्री प्राप्त की।

डॉ. अवंतिका सिंह
लेखिका, लखनऊ

पीएचडी पूरी होते ही गाजीपुर डिग्री कॉलेज और फिर बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी (बीएचयू) में हिंदी के विभागाध्यक्ष के रूप में 1971 से 2003 तक अध्यापन कार्य किया। वे अपने विषय पर पूरी पकड़ रखते थे जिस कारण यूनिवर्सिटी में अपने विद्यार्थियों के बीच बहुत लोकप्रिय रहे। उनकी विद्वत्ता को पहचानते हुए वरिष्ठ आलोचक प्रो.नामवर सिंह जी ने हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य पर किताब लिखने को कहा। जिसे प्रो. चौथीराम जी ने बखूबी पूरा किया और इस किताब के प्रकाशन के बाद वह प्रसिद्ध हो गए। प्रो. काशीनाथ सिंह जी उनके अनन्य मित्र रहे हैं, इसका जिक्र काशीनाथ जी ने अपनी किताब में भी किया है। बीएचयू में पढ़ाते समय चौथीराम जी ने सिर्फ अध्यापन का कार्य किया। यहां से सेवानिवृत्ति के बाद अपने जीवन की दूसरी पारी में वे काफी मुखर होकर समाज के सामने आए।

उनकी कलम लगातार सामाजिक अत्याचारों, भेदभाव, जाति विषमताओं के खिलाफ गरीब, निर्बल, दलित, पिछड़े, आदिवासी और स्त्री विमर्श पर बड़े बेबाक-बेलौस अंदाज में लिखती रही। अनगिनत किताबों के रूप में हिंदी साहित्य में उनका योगदान लगातार बना रहा जिनमें प्रमुख हैं-हजारी प्रसाद द्विवेदी समग्र पुनरावलोकन,सांस्कृतिक पुनर्जागरण और छायावादी,आधुनिकता का लोकपक्ष और साहित्य,लोक और वेद आमने- सामने, मध्यकालीन लोक जागरण के सूत्रधार, उत्तरशती के विमर्श और हाशिए का समाज,लोकधर्मी साहित्य की दूसरी धारा,हिंदी के श्रेष्ठ रेखाचित्र आदि आदि। भक्तिकाल के मध्यकालीन संत साहित्य पर उनकी विशेषज्ञता रही है इसके साथ ही दलित, पिछड़े, आदिवासी लेखन पर भी वह अच्छी पकड़ रखते थे। उनका मानना था कि दलित लेखक, आदिवासी लेखक, पिछड़ा वर्ग लेखक जैसा कुछ नहीं होता है,बल्कि लेखक,लेखक होता है। उसका विभाजन संभव नहीं है। बेहद सरल स्वभाव,बिना लाग लपेट मुखर होकर अपनी बात कहने वाले,युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन के साथ उत्साहवर्धन करने वाले उदार व्यक्तित्व के धनी थे। संतों के लेखन में जैसा कहा गया कि कथनी और करनी में अंतर नहीं होना चाहिए वैसा गुण प्रो. चौथीराम जी में देखने को मिलता है। उनकी कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं था।

सभी प्रश्नों का निडर हो खुलकर जवाब देते और सभी से आत्मीयता बनाए रखते थे। अपने जीवन के अंतिम दिन भी वह अपने गांव की यात्रा से कुछ समय पहले ही वापस आए थे और अभी बहुत कुछ लिखने की इच्छा लिए लेखन में व्यस्त थे। कोई भी यह नहीं जान सका कि मजलूमों की आवाज को पुरजोर तरीके से उठाने वाली इस आवाज पर काल का ऐसा वज्रपात होने वाला है कि वह हमेशा-हमेशा के लिए खो जाएगी।

हमने हिंदी साहित्य के अनमोल हीरे को हमेशा हमेशा के लिए खो दिया। कुछ घंटे पहले सोशल मीडिया पर पूरी तरह सक्रिय रहे प्रो.चौथीराम यादव जी की यात्रा करते फोटो और मातृ दिवस की पोस्ट पढ़ रहे देशवासी यह दुखद समाचार सुनकर स्तब्ध रह गए। कोई भी विश्वास करने को तैयार नहीं था,पर कभी न लौटने के लिए वह अपनी अनंत यात्रा पर वह जा चुके थे। प्रो.चौथीराम जी जैसे लोग समाज में अब न के बराबर बचे हैं जिनसे नई पीढ़ी को अभी बहुत कुछ सीखना और समझना बाकी था। हिंदी जगत को बहुत बड़ा आघात पहुंचा है। ऐसे सरल व्यक्तित्व, सामाजिक न्याय के योद्धा और विद्वान का जीवन और रचा गया संपूर्ण साहित्य भावी पीढ़ियों को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा।

टोक्यो का सबसे पुराना सेन्सो जी मंदिर

यात्रा का अंतिम दिन हम घूमते टहलते रहे। माउंट फूजी जाने का प्रोग्राम पर मौसम साथ नहीं दे रहा था,घने बादल थे। हम लोगों ने तय किया कि माउंट फूजी टोक्यो ट्रेन से आते समय देख ही चुके हैं, उसके बेस तक घूम टहल ही आए, सो माउंट फूजी बेस तक की यात्रा हुई। घूमना टहलना हुआ। हम लोग शिंजुकू स्टेशन जाने के लिए कैंडा स्टेशन पहुंचे। कैंडा होटल के पास ही था,पर टोक्यो की तुलना में एक छोटा स्टेशन। जापान के सभी रेलवे स्टेशनों को एयरपोर्ट की तरह स्टेशन कम शापिंग माल कह सकते हैं।

यात्रा वृत्तांत

यहां भी हर तरह की दुकानें आपका स्वागत करती हैं। छोटे-छोटे स्टेशन भी पूरी तरह साफ सुथरे चमकते हुए दिखाई देते हैं। एस्केलेटर पर भी पूरी तरह अनुशासन,जिन्हें चलना नहीं वे बाएं खड़े रहते है,जिन्हें उस पर भी चलना है,जल्दी में हैं,वे दाहिने से एस्केलेटर पर भी चलते रहते हैं। अपने प्रस्थान वाले प्लेटफार्म पर मैंने सिगरेट पीने वालों के लिए अलग कक्ष देखा। काफी जापानी सिगरेट पीते हैं,पर निर्धारित जगहों पर ही। इसी के साथ अधिकांश जापानियों को मैंने मास्क पहने देखा। संक्रमण को रोकने के साधन के रूप में जापान में मास्क कोविड के बहुत पहले से लोकप्रिय है। अगर किसी को सर्दी है या अस्वस्थ है तो भी वह सामने वाले की सुरक्षा के लिए भी मास्क पहनता है। यहां मास्क पहनना व्यक्ति के विवेक पर छोड़ दिया गया है।

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
से.नि., पुलिस महानिरीक्षक

हम पहले रेल पास से ओत्सुकी तक गए। फिर वहां से कावागुची तक अलग से टिकट खरीद कर गए। यह लाइन पहाड़ पर चलती है। जैसे शिमला जाने वाली ट्रेन है,पर इसमें चढ़ाई उतनी नहीं है और यात्रा का समय भी करीब एक घंटा है। कावागुची से बस द्वारा माउंट फूजी बेस तक गए। वहां बड़ी-बड़ी झीले भी हैं,जहां घूमा टहला गया और फिर करीब शाम साढ़े पांच बजे तक वापस आए।

माउंटफूजी की कमी शाम को टोक्यो बाजार घूमते समय पूरी हो गई। पहले तो टोक्यो में पहली बार सब वे (मेट्रो) से चले।

आपने टोक्यो मेट्रो में 'ह्यूमन पुशर्स' के बारे में तो सुना होगा। मेरे सामने तो ऐसा मौका नहीं आया,पर बताया जाता है कि पीक घंटों में यात्रियों को गाड़ियों में ठूसने के लिए (जी हां, ठूसने के लिए) पुशर्स का इस्तेमाल होता है,जहां मेट्रो के दरवाजे बंद करवाने के लिए यात्रियों को अंदर धकेलना पड़ता है। ऐसी व्यवस्था करने वाली टोक्यो मेट्रो विश्व में इकलौती है। कुल मिलाकर जापान की ट्रेन सुविधा कमाल की है।

हम लोगों ने जे आर पास से अंतिम छड़ों में कई रिजर्वेशन कराए तो हम लोग शाम सब वे से असाकुसा में सेन्सो जी मंदिर देखने गए। सेन्सो जी टोक्यो का सबसे पुराना और महत्वपूर्ण मंदिर है। यह टोक्यो के असाकुसा जिले में स्थित है। लगभग 20 मिलियन वार्षिक आगंतुकों के साथ यह जापान में सबसे अधिक देखा जाने वाला मंदिर है। वैसे मंदिरों का खजाना क्योटो में था। आगंतुकों की संख्या के लिए यह जापान में शीर्ष 10 मंदिरों में से एक है। यह मंदिर बोधिसत्व कैनन (अवालोकेतोश्वर) को समर्पित है। कैनन का जापान में मतलब पवित्र

धर्मग्रंथ और "मानदंड या निर्णय का मानक है। किंवदंती के अनुसार दो मछुआरे को 628 ई. में सुमिदा नदी में कैनन की एक प्रतिमा मिली थी। उनके गांव के प्रमुख ने मूर्ति की पवित्रता को पहचाना और असकुसा में स्थित अपने घर को एक छोटे मंदिर में बदलकर इसकी स्थापना कर दी ताकि गांव के लोग कैनन की पूजा कर सके। पहला मंदिर 645 ईसवी में स्थापित किया गया था,जो इसे टोक्यो का सबसे पुराना मंदिर बनाता है। शुरुआती वर्षों में तोकूगावा कबीले के संरक्षक मंदिर के रूप में यह मंदिर नामित किया गया था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान,बमबारी से मंदिर को नष्ट कर दिया गया था। इसे पुनः बाद में बनाया गया और आज यह जापानी लोगों में पुनर्जन्म और शांति का प्रतीक है। आंगन में एक पेड़ है,जो हवाई हमलें के दौरान बमबारी से मिट गया था,यहां पुराने वृक्ष के ठूंठ से फिर से नया वृक्ष उग आया है और मंदिर के समान ही एक प्रतीक है।

यह मंदिर बौद्ध धर्म के तेंदई संप्रदाय से जुड़ा है। तेंदई स्कूल का कमल सूत्र पर ध्यान केंद्रित करने जोर है। महायान बौद्ध आंदोलन के कई सौ वर्षों के दौरान कई नए सूत्र संकलित किए गए जिनमें से एक लोटस सूत्र था। लोटस सूत्र में शाक्यमुनि द्वारा सभी जीवों की जीवन स्थिति को उस स्तर तक बढ़ाने की प्रतिज्ञा का वर्णन है, जिस स्थिति को उन्होंने प्राप्त किया था और कहा गया है कि यह प्रतिज्ञा लोटस सूत्र की शिक्षाओं में है। लोटस सूत्र शाक्यमुनि की शाश्वत आशा को प्राप्त करने और उसे साकार करने के लिए बार-बार करुणा का आह्वान करता है। लोटस सूत्र शाक्यमुनि और उनके शिष्यों के बीच बातचीत के रूप में है। सूत्र में हम सीखते हैं कि सभी लोगों में बुद्ध के बराबर करुणा और ज्ञान होता है।

सूत्र सभी लोगों को शाक्यमुनि जैसी ही जीवन स्थिति प्राप्त करने का मार्ग भी दिखाता है। लोटस सूत्र सिखाता है कि शाक्यमुनि की मृत्यु के बाद,जब लोग दुख,अविश्वास और भ्रम में पड़ गए हैं तब इसकी शिक्षाओं को लोगों के बीच साझा किया जाना चाहिए,क्योंकि वे आशा,साहस और सुरक्षा प्रदान करेंगे। भारत में नागार्जुन और वसुबंधु ने महायान बौद्ध धर्म और लोटस सूत्र के विचारों और शिक्षाओं का व्यापक रूप से प्रचार किया था। भिक्षु सैचो (767 से 822 ई., जिन्हें डेंगियो दाशी भी कहा जाता है) वर्ष 804 में चीन गए थे और अगले वर्ष तेंदई स्कूल के सिद्धांतों के साथ जापान लौट आए और यहां तेंदई बौद्ध स्कूल की स्थापना की।

तेंदई सदियों से जापान में बौद्ध धर्म का एक प्रमुख स्कूल था। मंदिर के पास की मार्केट कमाल की है। मंदिर के सामने करीब सौ दुकानें एक ही रूप रेखा की,एक ही तरह की सजावट और पूरी तरह से अनुशासित भीड़,मार्केट का एक अलग मजा दे रही थी। बेटी मानसी ने घूम घूमकर खरीदारी भी की। इस मार्केट के पालकी दोनों साइड की मार्केट भी बहुत सुंदर। चेरी फूलों की तरह ही स्त्री-पुरुषों की भी चारो तरफ बिखरी सुंदरता खिलखिला रही थी।

बाजार से लौटकर होटल आते समय,हमने एक इंडियन रेस्तरां में भारतीय खाने का आनंद लिया। जापानी खाना अच्छा है। उसे भी कई बार खा चुका हूं। पूरे जापान में करीब पांच हजार भारतीय भोजन के रेस्तरां है जिसमें टोक्यो में ही करीब 1400। लग रहा था दुनिया वाकई समतल हो गई है। हर-हर चीज उपलब्ध है। एक देश की आर्थिक स्थिति में उछल कूद पूरी दुनिया पर असर डालती है। वतन वापसी की यात्रा के लिए हम टोक्यो रेलवे स्टेशन पहुचे।

स्वामी विवेकानंद वर्ष 1893 में जापान आए थे। दरअसल जब वे विश्व धार्मिक सम्मेलन में शामिल होने शिकागो जा रहे थे तो कुछ अवधि के लिए बीच में जापान रुके थे। उन्होंने जापान के ओसाका,क्योटो और टोक्यो शहरों का भ्रमण किया था। उन्होंने कहा था हर भारतीय को अपने जीवन काल में एक बार जापान जुरूर आना चाहिए। जापान के सांस्कृतिक मूल्यों ने उनके अतंर्मन पर गहरा प्रभाव डाला था।

अब मुझे भी लगता है कि जापान जाकर ही जापानियों की दक्षता को,उनकी वैज्ञानिक सोच को,उनकी तकनीकी क्षमताओं को, द्वितीय विश्व युद्ध की त्रासदी के बाद उनके दुनिया की शीर्ष आर्थिक ताकत बनने को,उनके तौर तरीकों को,उनके अनुशासन को देखा और समझा जा सकता है।

खाना खजाना

खट्टी-मीठी, चटपटी लौंजी

क्या आपने केरी की लौंजी की गुठली चूसने का आनंद लिया है? बाजार में कच्ची कैरी की आवक शुरू हो गई है। इसके स्वाद और गुणों का फायदा लें, ये खट्टी-मीठी और चटपटी लौंजी बच्चे, बूढ़ें और जवान सभी की पसंदीदा है।

सामग्री

- कैरी (कच्चे आम) - 300 ग्राम
- किशमिश/ छोटे अंगूर- 50 ग्राम
- तेल - 1-2 बड़े चम्मच
- हींग - 1 चुटकी
- जीरा - 1/4 छोटी चम्मच
- सौंफ - 1/4 छोटी चम्मच
- कलौंजी-1/4 चम्मच
- हल्दी पाउडर-1/4 चम्मच से कम
- चीनी या गुड़- 1/4 कप
- नमक - स्वादानुसार
- काला नमक - 1/4 छोटी चम्मच
- लाल मिर्च पाउडर - 1/4 चम्मच
- गरम मसाला -आधा छोटी चम्मच
- सूखे पुदीने की पत्तियां- 1 बड़ा चम्मच

बनाने की विधि

कैरी को अच्छी तरह धोइए, छीलिए और छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लीजिए। अब कढ़ाई में तेल डाल कर गरम कीजिए, गरम तेल में हींग, जीरा और सौंफ डालिए, हल्का सुनहरा भूनिए, हल्दी पाउडर डालिए, कटी हुई कैरी डालकर, नमक, काला नमक और लाल मिर्च पाउडर डाल दीजिए, मसाला मिलाकर 1-2 मिनिट भूनिए। अब इसमें किशमिश और आधा कप पानी डालिए और ढककर आम के टुकड़े नरम होने तक पकने दीजिए। अब इसमें चीनी या गुड़ डाल दीजिए, गरम मसाला और सूखे पुदीने की पत्तियों को हाथ से मसलकर भी डाल दीजिए, धीमी आंच पर,लौंजी को खुले ही गाढ़ा होने तक पकने दीजिए।

अब आपकी कैरी की लौंजी तैयार है। गैस बंद कर दीजिए। कैरी की लौंजी को प्याले में निकालिए, अपने खाने में पूरी पराठा, नान के साथ परोसिए और इसके रसीले स्वाद का आनंद लीजिए।

एस.बी. मुथा
फूड ब्लॉगर

कुमाऊं क्षेत्र की पहचान बाल मिठाई

नेपाल से आई यह मिठाई जिसे पहली बार अल्मोड़ा के लाल बाजार की एक दुकान में बनाया गया। मैं पहली बार जब अल्मोड़ा गया तो यह प्रसिद्ध "बाल मिठाई" खाने और खरीदने का मौका मिला था। इस मिठाई का वह अनोखा स्वाद आज भी स्मृति में तरोताजा है। जिस तरह 'हैदराबाद की बिरयानी' और 'लखनऊ के टुंडे कबाब' उनकी पहचान बन गए हैं।

उसी तरह उत्तराखंड के कुमाऊं की बाल मिठाई भी आज पूरी दुनिया में उत्तराखंड की पहचान बन गई है। चॉकलेट जैसी दिखाई देने वाली 'बाल मिठाई' खाकर लोग इसका स्वाद वर्षों नहीं भूल पाते। बाल मिठाई को उत्तराखंड की चॉकलेट भी कहा जाता है। एक ऐसी चॉकलेट जिसे कोको बीन्स से नहीं,बल्कि खोए से बनाया जाता है। बाल मिठाई की खासियत ये है कि ये खाने में कुरकुरी लगती है। इस मिठाई का स्वाद इतना लाजवाब है कि पर्यटक और यहां के लोगों की ये मनपसंद मिठाई बन गई है। उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र की पहचान बन चुकी बाल मिठाई का इतिहास भी अपने आप में निराला है। इतिहासकारों का कहना है कि ये मिठाई 7वीं-8वीं सदी में नेपाल से उत्तराखंड आई थी। वहां से ये अल्मोड़ा कैसे पहुंची इसके साक्ष्य तो नहीं मिले,लेकिन ये अल्मोड़ा की पसंदीदा मिठाई कैसे बनी, इसके तथ्य जानने योग्य हैं।

उमाकांत दीक्षित
सेवानिवृत्त प्रोफेसर

बाल मिठाई को 20 वीं सदी में प्रसिद्ध करने का श्रेय लाला जोगाराम जी को जाता है। अल्मोड़ा के लाल बाजार में उनकी दुकान हुआ करती थी। उनकी दुकान में ही ये स्पेशल मिठाई बनाई जाती थी। अब जब मिठाई स्पेशल है तो इसे बनाने की विधि भी स्पेशल ही होगी। जोगाराम जी बाल मिठाई बनाने के लिए डेयरी प्रोडक्ट्स के लिए मशहूर एक गांव फालसीमा से स्पेशल क्रीम वाला दूध मंगवाते थे। फालसीमा से आए दूध से वो खोया बनाते थे। इससे वो पहले भूरे रंग की बर्फी तैयार करते थे और फिर बाद में उस पर चाशनी में भीगे हुए खसखस के दाने लपेट देते थे।

बाल मिठाई की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह खोए से बनी होने के बाद भी 15-20 दिन खराब नहीं होती। वही ताजगी और वही स्वाद बना रहता है। इस तरह जो बाल मिठाई बनकर तैयार होती थी,उसे खाते ही लोग उसका गुणगान करने लगते थे। कहते हैं कि उस दौर में अंग्रेज भी इस मिठाई के शौकीन हुआ करते थे। वो इसे अपने साथ इंग्लैंड भी लेकर जाते थे। आज बाल मिठाई अमेरिका, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में भी बड़े ही चाव से खाई जाती है।

साप्ताहिक राशिफल

-पं.मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष

इस सप्ताह के शुरु की अवधि आपकी शिक्षा,मनोरंजन से संबंधित गतिविधियों,परामर्श कार्य और भावनात्मक संबंधों के लिए विशेष रूप से अनुकूल बनी हुई है। इसके अलावा आप अपने बच्चे के उज्ज्वल भविष्य से संबंधित योजनाएं तैयार करने में सफल रहेंगे।

वृष

इस सप्ताह के शुरु में आपको परिवार में शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए स्वयं पहल करनी होगी। माता के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आपको किसी योग्य चिकित्सक की सलाह लेनी पड़ सकती है। वाहन संबंधी समस्याएं आपके लिए तनाव का विषय हो सकती है।

मिथुन

इस सप्ताह के आरंभ में आप अच्छे मित्रों, भाई-बहनों और रिश्तेदारों के साथ सुखद जीवन का आनंद लेंगे। आपके पारिवारिक माहौल में भी सुधार होगा और आप सभी सामाजिक समारोहों में भाग लेंगे। सप्ताह का मध्य भाग आपकी मानसिक स्थिति, प्रसन्नता, माता की सेहत और घरेलू मुद्दों के लिए अनुकूल नहीं है।

कर्क

इस सप्ताह के शुरुआत की अवधि वित्तीय लाभ के लिए अत्यंत शुभ रहेगी। परिवार की समृद्धि और बचत में वृद्धि होगी। पर्याप्त वित्तीय लाभ होने से परिवार के सभी सदस्य खुश रहेंगे और घर में आनंददायक माहौल रहेगा। आपको कठिन समय में लोगों की मदद मिलेगी। यह आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगा।

सिंह

इस सप्ताह की शुरुआत में आप सेहत, शोध कार्य, प्रशासनिक कौशल और मानसिक शक्ति में वृद्धि के लिए आवश्यक कदम लेंगे। यद्यपि आप ज्यादा ध्यान केन्द्रित कर व्यवस्थित ढंग से योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसंद करेंगे,किंतु आपको बाधाएं और बार-बार हस्तक्षेप पसंद नहीं होंगे।

कन्या

इस सप्ताह के शुरुआती दिनों में कुछ मन की अशांति, वित्तीय घाटे और मानसिक तनाव होने का संकेत मिल रहा है। नए कार्यों को शुरु करने से बचें। सप्ताह के मध्य भाग में आप अपनी सारी ऊर्जा को भाग्योदय के लिए प्रयोग करेंगे। आप विश्वास के साथ अपने कार्यों को पूरा करेंगे।

तुला

इस सप्ताह के शुरू की अवधि धन आगमन और इच्छाओं की पूर्ति के लिए शुभ है,परंतु सेहत के लिए यह समय औसत रहेगा। इस समय भाई-बहन और परिवार का समर्थन प्राप्त होने से अचानक से भाग्य आपके पक्ष में हो सकता है।

वृश्चिक

इस सप्ताह के शुरू के दिन व्यावसायिक पक्ष में उन्नति के लिए शुभ रहेगा। व्यवसाय में जल्द सुधार की उम्मीद बन रही है। वरिष्ठ अधिकारी अचानक से आपके पक्ष में हो जाएंगे। आप अच्छी किताबें अपने साथ रखें उनसे अपना ज्ञान बढ़ाएं यह आपके भविष्य के लिए फायदेमंद रहेगा।

धनु

इस सप्ताह के शुरू का समय आपके भाग्य के सहयोग और धन आगमन के लिए बेहद फायदेमंद रहेगा। बुजुर्गों का सहयोग और समाज के सम्मानित व्यक्तियों का सहयोग और धार्मिक विषयों में आस्था रखना आपके भाग्योदय में सहयोग करेगा। इसके साथ ही गुरुओं की सेवा करने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए यह सही समय है।

मकर

इस सप्ताह के शुरुआत की अवधि आपके स्वास्थ्य, प्रसन्नता और आत्मविश्वास के लिए शुभ नहीं है। आपको महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा करने में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में आप निराश न हो,आपको धैर्य बनाए रखना होगा।

कुंभ

इस सप्ताह के आरंभ में आपके वैवाहिक जीवन में उत्साह और आनंद उच्च स्तर पर रहेगा। अपनी खुशियों को बेहतर करने के लिए आपको अच्छे अवसरों की तलाश रहेगी। कार्यों को पूरा करने में महिलाओं का सहयोग प्राप्त करने के लिए यह एक अच्छा समय है। आपका जीवनसाथी आपको बेहतर समझेगा।

मीन

इस सप्ताह की शुरुआत में आपको सेहत के प्रति सतर्क रहना होगा,आपको सलाह दी जाती है कि आप पर्याप्त मात्रा में आराम करें। आप अपने विरोधियों के साथ प्रतिस्पर्धा और अपने ऋणों का भुगतान और मुकदमेबाजी से संबंधित समस्याओं को हल करने संबंधित रणनीतियों को तैयार करने में व्यस्त रहेंगे।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 83

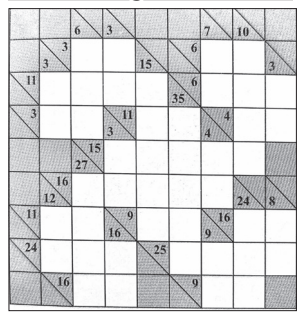

काकुरो 82 का हल

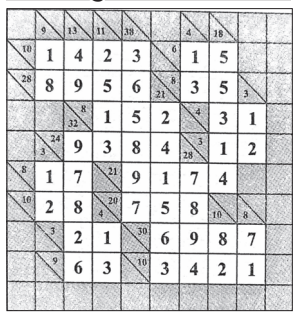

दादरा और ठुमरी की एक्सपर्ट थीं बेगम अख्तर

क्या कभी आपने सुना है कि सिगरेट पीने के लिए किसी ने पूरी ट्रेन रुकवा दी हो। या फिर आपने कभी सुना कि सिगरेट की लत किसी इंसान पर इतनी हावी हो सकती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में जो मुकाम बेगम अख्तर उर्फ अख्तरी बाई ने हासिल किया है वो कोई और फिर कभी न कर सका। वो कइयों के लिए अम्मी थीं। कइयों की बेगम अख्तर थीं।और जाने कितने लोग उन्हें बेतहाशा चाहते थे। बेगम अख्तर को चाहने वालों में अमीर-गरीब का कोई फर्क नहीं था। हर दर्जे के लोग बेगम अख्तर और उनकी गायकी से बेपनाह मुहब्बत किया करते थे। दादरा और ठुमरी की एक्सपर्ट कहलाए जाने वाली बेगम अख्तर की जिंदगी की कहानी किसी फिल्म से कम नहीं है। यही वजह है कि बेगम अख्तर के बारे में वक्त-वक्त पर बहुत से लेखकों ने बहुत कुछ लिखा है,पर इस लेख में हम उनकी जिंदगी की कहानी नहीं,बल्कि उनसे जुड़ी कुछ दिलचस्प बातें जानेंगे।

7 अक्टूबर 1914 को बेगम अख्तर का जन्म फैजाबाद में हुआ था। इनकी मां मुश्तरी बेगम इन्हें प्यार से बिब्बी कहकर पुकारती थीं। बिब्बी के पिता असगर हुसैन लखनऊ के एक नामदार वकील थे। मुश्तरी बेगम उनकी दूसरी पत्नी थीं। कहा जाता है कि बिब्बी यानि बेगम अख्तर की मां मुश्तरी बेगम पहले एक कोठे पर गाने का काम किया करती थीं। वहीं पर उनकी मुलाकात असगर हुसैन से हुई थी। पहले से शादीशुदा असगर हुसैन मुश्तरी बेगम को अपना दिल दे बैठे और उन्होंने मुश्तरी बेगम से शादी कर ली।

शादी के एक साल बाद ही मुश्तरी बेगम ने दो जुड़वा बेटियों को जन्म दिया। एक थी बिब्बी और दूसरी थी जोहरा। दोनों बच्चियां जब महज चार साल की थी तो किसी ने इन दोनों को जहरीली मिठाइयां खिला दीं। बिब्बी तो किसी तरह बच गई,लेकिन उनकी बहन जोहरा न बच सकी। बेटी खोने के गम से मुश्तरी बेगम अभी ठीक से उबर भी नहीं पाई थीं कि पति असगर हुसैन ने भी उन्हें और उनकी बेटी बिब्बी को छोड़ दिया। मुश्तरी बेगम के लिए जिंदगी बेहद मुश्किल हो गई।

बेटी की परवरिश करने में उन्हें परेशानी होने लगी। दूसरी तरफ बेटी अख्तरी उर्फ बिब्बी का मन भी पढ़ाई में नहीं लगता था। बिब्बी की दिलचस्पी शेरो शायरी में ज्यादा थी। शुरू में तो मुश्तरी बेगम इसके सख्त खिलाफ थी,लेकिन बाद में वो भी मान गई। फिर शुरु हुआ संगीत की तालीम और बिब्बी का सफर। उस्ताद इमदाद खान और उस्ताद अता मोहम्मद खान इनकी तालीम के सफर के शुरुआती गुरु रहे। बाद में ये कलकत्ता आ गईं और यहां इन्होंने उस्ताद मोहम्मद खान, उस्ताद अब्दुल वहीद खान और उस्ताद झंडे खान से इंडियन क्लासिकल म्यूजिक की तालीम हासिल की।

बेगम अख्तर 15 साल की थी जब उन्होंने पहली दफा स्टेज पर गजल गायकी की थी। तब तक वो अपना नाम बिब्बी से बदलकर अख्तरी बाई फैजाबादी कर चुकी थीं। कांपते पैरों संग अख्तरी बाई ने अपनी पहली गजल परफॉर्मेंस दी थी और जैसे ही उनकी वो परफॉर्मेंस खत्म हुई, हिंदुस्तान में गजल गायकी के एक नए अध्याय की शुरुआत हो गई।

ये कहीं से कहीं तक भी तय नहीं था कि अख्तरी बाई कोलकाता में हुए उस प्रोग्राम में गाएंगी। देश के कई दिग्गज कलाकारों ने उस प्रोग्राम में शिरकत की थी। उस्ताद अमान अली खान साहब और उनके नौजवान शागिर्द उस्ताद बिस्मिल्लाह खान भी उस प्रोग्राम में मौजूद थे। प्रोग्राम जब अपने दूसरे हिस्से में पहुंचा तो अचानक आयोजकों के बीच अफरा-तफरी मच गई। एक बड़े कलाकार ने ऐन वक्त पर प्रोग्राम में आने से इंकार कर दिया था।

आयोजकों को समझ में नहीं आ रहा था कि उस कलाकार की जगह अब किससे गवाया जाए। तब उस्ताद अता मोहम्मद खान ने आयोजकों से कहा कि उनकी एक शागिर्द है। उससे गवा दिया जाए। आगे जो होगा उसका अल्लाह मालिक है। वहीं दूसरी तरफ हॉल में बैठे दर्शकों ने भी शोर मचाना शुरू कर दिया था। आखिरकार लोग टिकट खरीदकर वो प्रोग्राम देखने आए थे। उस्ताद अता मोहम्मद खान के कहने पर कांपती टांगो से अख्तरी बाई फैजाबादी स्टेज पर आई और आंख बंद करके उन्होंने अल्लाह को याद किया। फिर उन्होंने छेड़ा मुमताज बेगम का मशहूर कलाम, "तूने बुत-ए-हरजाई, कुछ ऐसी अदा पाई। तकता है तेरी ओर हर एक तमाशाई।"

उस हॉल में बैठे लोग अख्तरी बाई की आवाज की कशिश के दीवाने हो गए। एक के बाद एक अख्तरी बाई ने चार गजलें सुना दीं। तालियों की गड़गड़ाहट के साथ जब वो प्रोग्राम खत्म हुआ तो एक महिला अख्तरी बाई के पास आई और बोली, "मैं कुछ ही देर के लिए इस प्रोग्राम में आई थी,लेकिन जब तुम्हें सुना तो फिर जाने का मन ही नहीं किया। अब कल तुम मुझे सुनने आना।" उस महिला ने अख्तरी बाई को खादी की एक साड़ी तोहफे में दी। वो महिला थीं भारत की स्वर कोकिला सरोजिनी नायडू।

अख्तरी बाई फैजाबादी यानि बेगम अख्तर को तन्हाई से बड़ा डर लगता था। उन्हें तन्हाई का इतना खौफ था कि होटल के अपने कमरे में वो कभी भी अकेले नहीं ठहरती थीं। तन्हाई की वजह से ही उन्होंने शराब और सिगरेट को अपना साथी बना लिया था। लोग कहते हैं कि वो चेन स्मोकर थीं। सिगरेट की लत की इस कदर शिकार थी कि रमजान के महीने में रोजे भी बमुश्किल ही रख पाती थीं।- साभार : सोशल मीडिया

सिगरेट की तलब का दिलचस्प किस्सा

बेगम अख्तर की सिगरेट की तलब से एक बड़ा ही दिलचस्प किस्सा जुड़ा है। हुआ कुछ यूं कि एक दफा बेगम ट्रेन में सफर कर रही थीं। सफर के दौरान जब सिगरेट खत्म हो गई तो बेगम अख्तर टेंशन में आ गईं। वो सिगरेट की लत की इतनी ज्यादा शिकार थीं कि जैसे ही एक स्टेशन पर ट्रेन रुकी तो बेगम फौरन ट्रेन से उतरकर स्टेशन पर सिगरेट की दुकान तलाशने लगीं,लेकिन पूरे स्टेशन पर न तो उन्हें सिगरेट की कोई दुकान नजर आई और न ही कोई शख्स ही सिगरेट बेचता हुआ नजर आया। बेगम दौड़ती हुई ट्रेन के गार्ड के पास पहुंची और उससे अपने लिए सिगरेट लाने के लिए कहा। शुरू में तो गार्ड ऐसा करने के लिए कतई तैयार नहीं हुआ,मगर बेगम अख्तर सिगरेट की तलब के सामने इतनी बेबस हो रही थी कि उन्होंने गार्ड से उसका लालटेन और हरा झंडा छीन लिया। फिर तो मजबूरी में गार्ड को स्टेशन के बाहर जाकर बेगम के लिए सिगरेट का एक पैकेट खरीदकर लाना ही पड़ा। तब कहीं जाकर ट्रेन आगे रवाना हो सकी। बेगम की सिगरेट की आदत से ही एक और कहानी जुड़ी है। दरअसल बेगम अख्तर ने पाकिजा फिल्म को सिनेमा हॉल में छह दफा देखा था और वो इसलिए क्योंकि बेगम सिगरेट पीने के लिए फिल्म छोड़कर बाहर चली जाती थीं और जब तक वो वापस लौटती थी तो तब फिल्म काफी आगे निकल चुकी होती थी। इस दौरान फिल्म के कई सीन्स छूट जाते थे। इसलिए बेगम ने छह दफा टिकट खरीदकर पाकिजा फिल्म देखी और तब जाकर उनकी ये फिल्म पूरी हुई।

चम्पा के फूलों की रौनक

मानसून की दस्तक के साथ चम्पा चारो तरफ चांदनी की तरह छिटक जाती है। हर तरफ उसकी ही रागिनी होती है। खूबसूरत सी नाजुकी वाले इस फूल को देख जेहन में ये ख्याल बार-बार आता है कि क्या वजह होगी कि गौरा पंत शिवानी ने अपने उपन्यास में इसे श्मशान से जोड़कर देखा और श्मशान चम्पा नाम दिया।

उपन्यास का कथानक तो याद नहीं रहा। इसलिए इस सिलसिले में कुछ कहना मुश्किल है,लेकिन तस्दीक करने पर पता चला कि चम्पा दुःख-सुख,गम और खुशी में बराबरी से याद किया जाता। ये कभी खुशी का साथी बनता है तो कभी गम का। समभाव उपस्थिति और स्वभाव नहीं है इसका।

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

'भंवर न आवे पास' वाला किस्सा तो यूं गुना गया होगा कि वानस्पतिक रूप से चम्पा के फूलों में मकरंद का अभाव होता है। रात के वक्त यह अपनी सुगंध में बांधकर कुछ कीट-पतंगों को अपने पास बुला लेता है। वही इसके परागण के वाहक बनते हैं।

हिंदुस्तान की बात करें तो अपना बाबू मोशाय वाला इलाका इसे दुःख और विपदा से जोड़ता है। गौरतलब है कि बंगाली समाज ज्यादहतर सफेद फूलों को शोक से जोड़ता है। चम्पा को विशेष रूप से क्रिया करम से जोड़कर देखा जाता है।

बांग्लादेश में इसे पवित्र पुष्प का दर्जा प्राप्त है और इसे गुलांचा का ही एक प्रकार माना जाता है। गुलांचा या चंपक मिथकों में कृष्ण के स्वर्ग स्थित अभ्यारण्य में निवास करता है। देश बाहर माया और एजटेक सभ्यता के लोग इसे जीवनदायिनी शक्ति के रूप में देखते हैं और देवताओं, उर्वरता तथा स्त्री की यौनिकता से अभिन्न समझते हैं। इसे अभिजात्यता का प्रतीक भी माना गया है। एजटेक सभ्यता में सामंती बाग-बगीचों को चम्पा के पौधे रोप कर सजाया-धजाया जाता था।

आधुनिक पोलिनेशिया से चम्पा से जुड़ा रोचक संदर्भ मिलता है। वहां स्त्रियां अपने रिलेशनशिप स्टेटस को जाहिर करने के लिए चम्पा को धारण करती हैं। प्रेम की तलाश करती स्त्री इसे दाएं कान में पहनती है तो प्रेम में दग्ध स्त्री बाएं कान में।

सांस्कृतिक जीवन में पैठने के साथ-साथ कुछ देशों में चम्पा ने राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान हासिल की है। निकारागुआ और लाओस में इसे राष्ट्रीय पुष्प का दर्जा प्राप्त है। हमारे देश के पश्चिमी घाट वाले हिस्से में ये फूल ब्याह के मौके पर रंग जमाता है। दूल्हा-दुल्हन एकदूजे को मख्खनी रंगत वाले चम्पा के फूलों की माला पहनाते हैं और भविष्य की सुख-शांति का ताना-बाना बुनने की शुरुआत करते हैं।

लाल रंग,जो आमतौर पर उत्तर भारत में ब्याह-पर्व के मौके से जुड़ता है,उसका चलन पश्चिमी घाट वाले क्षेत्र में नहीं है। लाल चम्पा के फूल ब्याह में वर्जित हैं। बचे हुए कर्नाटक के मंदिरों में भी चम्पा के फूलों की रौनक रहती है।

फिलीपींस, इंडोनेशिया, मलेशिया में इसे भूत-प्रेत और कब्रिस्तान का साथी माना गया है। इन देशों के कब्रिस्तान में चम्पा अनिवार्य रूप से मिलता है। सुख-दुख, डर, इश्क़, आध्यात्म के साथ-साथ पूर्वी अफ्रीका की स्वाहिली कविताओं में चम्पा का फूल रूमान भी जगाता है।

पंख वाले बीज

घर से पूरब दिशा में ताल के किनारे भीट जैसी एक ऊंची खाईं पर एक बूढ़ा चिलबिल का पेड़ हुआ करता था। चिलबिल का नाम भी अलग-अलग भाषा और जगहों पर अलग-अलग-चिरमिल या बनचिल्ला, अंग्रेजी में इंडियन एल्म या मंकी बिस्किट ट्री तो संस्कृत में चिरबिल्व।

वैसे तो यह पेड़ साल भर गुमनामी में रहता,लेकिन चैत्र-वैसाख यानी अप्रैल मई के महीने में अपनी मौजूदगी की चिट्ठी भेजता। जब पुरवाई बयार चलती तो उसके पंख लगे हुए बीज हमारे दुआर तक उड़ कर आ जाते और बता देते कि लो हम भी आ गए हैं। सुनहरे-भूरे पंख लगे हुए बीज जिनको कि कुदरत ने बनाया ही इसीलिए है कि हवा के साथ वो उड़कर हमारे पास तक आ जाएं। ताल से घर तक उड़कर आते-आते वो लगभग एक फर्लांग दूरी तय करते। आते-आते उनके थके-थके पंख सूख-सूख कर खुश्क हो जाते। छूते ही टूट-टूट जाते,हथेलियों में बिखर-बिखर कर रह जाते। बीच में उनका बीज रह जाता। कुछ-कुछ दिल के आकार के। हम उन्हें छील कर उनका स्वाद लेते। कुछ-कुछ मेवे जैसा। माड़ से भरे और तैलीय पुट लिए। स्टार्च और ऑइल से भरे चिकने, चमकीले और चपटे बीज,लेकिन ये मशक्क़त वाला उद्यम होता। सैकड़ों छिलका उतारने पर बमुश्किल कुछ ग्राम बीज ही प्रयोज्य मिलते।

प्रशांत द्विवेदी
गोरखपुर

फिर मौसम बदलता और धीरे-धीरे वर्षा ऋतु आ जाती। पंख लगे हुए कुछ बीज अपनी मंजिल पा लेते। ऐसी जगह पहुंच जाते जहां वो नमी पाकर दुबारा उग सकें। उसके बाद चिलबिल का वो बूढा पेड़ जैसे बेमानी हो जाता। हमें उसकी साल भर याद न आती,लेकिन अगले बरस फिर चैत्र-वैसाख के महीने में गेहूं की दौंराही के बीच,कट चुके खेतों से होते हुए वे पंख लगे बीज उड़ते-सरकते हम तक आ धमकते और कहते हैं कि हम कहीं गए नहीं हैं,अपितु यहीं हैं।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

'अहिच्छत्र के पुरावशेष' नष्ट होती ईंटों द्वारा निर्मित धरोहरें

वर्तमान में अहिच्छत्र की स्थिति पुराने ईंटों के भवनों की बुनियादों से अभिषिक्त शहर की है,जो एक मोटी ईंटों की दीवार से घिरा हुआ था। यह ईंटों से बना हुआ है। कनिंघम ने जब अहिच्छत्र का सर्वे किया था। तब भी अनेकों टीले थे जो मिट्टी के ढेर थे। उन्हीं में से उसने उत्खनन कराया। यहां के स्तूप, मंदिर आदि सभी ईंटों से बने हैं। पीली मिट्टी से बनी पकी हुई 'इंटों का उसमें बहुत प्रयोग हुआ है। लाल ईंटें भी लगी हैं। अहिच्छत्र नगर के चारों ओर 16 फीट 8 इंच मोटी चहारदीवारी सुरक्षा हेतु बनी हुई थी। इसका घेरा लगभग 8 किमी है। अहिच्छत्र से निकले मंदिर स्तूपों तथा प्राचीन चारदीवारी से 16 इंच लंबी, 11 इंच चौड़ी व 3 इंच 2 सूत मोटी ईंटों का प्रयोग अधिक किया गया है। अहिच्छत्र से सैकड़ों ऐसी ईंटें भी मिलती हैं, जिन्हें तराशकर, नक्काशीदार बनाकर, कलात्मक ढांचों में ढाल कर बनाया जाता था। ऐसी ईंटें भवनों के द्वार, चौखट, कंगूरे, कोण आलय आदि के ऊपर लगाई जाती थी।

अहिच्छत्र के ईंटों द्वारा निर्मित विभिन्न धार्मिक, आवासीय, चहारदीवारी आदि इमारतों के ढांचों में लगी ईंटें सदियों से पड़ोसी गांवों द्वारा ले जाई जाती रही है। नेविन ने बरेली गजेटियर में यहां तक लिखा है कि अहिच्छत्र का किला पड़ोसी गांवों के लिए कभी समाप्त न होने वाला ईंटों का भंडार रहा है। जब चंदौसी की ओर रेलवे लाइन बिछाई गई। तब रेलवे ठेकेदारों ने किले को अत्यंत क्षति पहुंचाई। यहां की ईंटों का मार्गों, नहर नालों आदि अनेक प्रयोजनों में निरंतर प्रयोग होता रहा है। एटकिन्सन ने रुहेलखंड गजेटियर में लिखा है कि ग्राम आलमपुर तो मुख्य रूप से किले अथवा चारों ओर फैले हुए टीलों द्वारा ही बना हुआ है।

इन गांवों में जाकर देखने से पता चलता है कि पुराने भवन किले की ईंटों से ही बने हैं,लेकिन अब बहुत से मकान वहां भट्टे की ईंटों के ही बने दिखाई देते हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि किले की ईंटों का इस प्रयोजन में प्रयोग नहीं हो रहा है। किले से ईंटें ले जाने का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह हुआ है कि यहां की ऐतिहासिक धरोहरों के मूल ढांचे नष्ट हो गए जिससे भविष्य में यहां खुदाइयां हुईं तो इन ढांचों की वास्तविकता जानने में अत्यंत कठिनाई आएगी।

'अहिच्छत्र के पुरावशेष' अहिच्छत्र से प्राप्त संपदा और मूर्तियां कहां-कहां?

लगभग 56 किमी क्षेत्र में फैले खंडहरों से अनुमान लगाया जा सकता है कि प्राचीन काल में जब यह शहर अपने स्वर्ण काल में रहा होगा तब कितना विशाल एवं भव्य रहा होगा। वर्तमान में यह मात्र ढेरों एवं खंडहरों के रूप में ही है। सर्व प्रथम 1833 ई. में हाडग्सन ने यहां पर खुदाई कराई। फिर सन् 1862-63 में कनिघम ने, सन् 1891-92 में फ्यूरर ने खुदाई कराई। सन् 1940-44 तथा 1963-65 में भी यहां की खुदाइयां की गई। इस समस्त खुदाइयों से विभिन्न पुरावशेषों के अतिरिक्त मूर्तियां, मृद्भांड, मुद्राएं, ताम्रपत्र एवं शिलालेख आदि मिले। खुदाइयों से प्राप्त सभी पुरातात्विक संपदा दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय, राज्य संग्रहालय लखनऊ, आगरा, प्रयाग एवं मथुरा में संगृहीत हैं। विभिन्न पुरातात्विक विद्वान एवं उसके प्रति समर्पित महानुभावों ने भी अहिच्छत्र के खंडहरों से विभिन्न सामग्री संकलित की है। वह उनके व्यक्तिगत संग्रहालयों-गुरुकुल संग्रहालय झज्जर एवं मुरादाबाद आदि में संगृहीत है। ब्रिटिश काल में खुदाइयों से प्राप्त बहुत सी सामग्री लंदन संग्रहालय में है।

खुदाइयों के अतिरिक्त भी अहिच्छत्र से विशेषकर वर्षा काल मे तथा सामान्यतः वर्षभर कुछ न कुछ सामग्री मिलती रहती है। यहां के क्षेत्रीय चरवाहे गाय, भैंस बकरियों को खंडहरों पर चराते हैं। दिन भर खंडहरों पर आंखें गढ़ाए घूमते रहते हैं, इसी चेष्टा में कुछ न कुछ मिलता रहता है। वर्षा काल में ऊपरी सतह की मिट्टी या रेत पानी के साथ वह जाता है जिससे ठोस वस्तु, सिक्के, मूर्ति आदि वस्तुएं स्पष्ट दिखाई देने लगती हैं। उसे यह चरवाहे रख लेते हैं। साथ ही किले के क्षेत्र में खेती करने वाले किसान लोग जब हल चलाते हैं तब भी कुछ सामान खेतों में मिल जाता है। इस सामग्री को संग्रह का शौक रखने वाले लोग, संग्रहक इतिहास पुरातत्व विद् एवं व्यापारी खरीद लेते हैं जितनी सामग्री अब अहिच्छत्र से मिली है। इससे सहस्त्रों गुणा अधिक अभी भी इन खंडहरों में दबी पड़ी है।

अहिच्छत्र से प्राप्त वृहदाकार एवं अन्य आकारों की विभिन्न मूर्तियां जो कि यहां की खुदाइयों से प्राप्त हुई हैं। दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय, राज्य संग्रहालयों एवं व्यक्तिगत संग्रहालयों में संगृहीत हैं। इनके अतिरिक्त विभिन्न शौकीन लोगों के ड्राइंग रूमों की यहां से प्राप्त मूर्तियां कुओं की शोभा बढ़ा रही हैं, जो कि उन्होंने किन्ही स्रोतों से खरीदी हुई होती हैं। अनेक मूर्तियां श्रद्धालुजनों ने मंदिरों में स्थापित कर ली हैं उनकी पूजा करते हैं। यही नहीं छोटी-छोटी मूर्तियां कुओं पर, पेड़ के नीचे स्थापित की हैं जिनकी ग्राम देवता (ग्राम देवता) के रूप में पूजा होती है। अनेक मूर्तियां होली के पश्चात् पड़ने वाले पारस्परिक त्यौहार बसोड़ा पर घर-घर ले जाकर पूजा के लिए रखी जाती है,जो कि माली (फूल) का व्यवसाय करने वाले अपने यहां संगृहीत रखते हैं। विभिन्न मूर्तियां व्यापारियों के यहां संकलित हैं।

अभिलेखों में अहिच्छत्र फरगुल बिहार अभिलेख

अहिच्छत्र में ब्राह्मी लिपि में मिश्रित संस्कृत में लिखा गया दो पंक्तियों का अभिलेख प्राप्त हुआ है जिसका काल दूसरी शताब्दी ई. निर्धारित किया गया है। अहिच्छत्रा के फरगुल विहार में धर्मघोष के दान का उल्लेख यहां प्राप्त हुआ है यह चतुर्भुज के आकार की चौकी पर अग्रिम भाग पर उत्कीर्ण है। यह चौकी लाल रेतीले पत्थर से बनी तथा उसके निचले भाग पर विचित्र यक्ष की मुद्रा बनाई गई हैं। चौकी संभवतः मठ के स्नान घर में प्रयुक्त की जाती थी। कुछ मायनों में इसकी उपलब्धि अपूर्व है। यक्ष की मुद्रा से अंकित यह सबसे प्राचीन प्रस्तर पट्ट है। यह इस ओर एक नए बौद्ध मठ फरगुल बिहार पर प्रकाश डालती है। इस पर सबसे पहले सही नाम अहिच्छत्र अंकित है।

दास्तान-ए-जाजमऊ

पुण्यतोया जान्हवी (गंगा) के तट पर अवस्थित जाजमऊ पौराणिक महत्व के साथ प्रागैतिहासिक महत्व का नगर है। सन् 1801 ई. (फसली सन् 1209) में जब कानपुर जिला बना तब जिले के 15 परगनों में एक जाजमऊ परगना भी था, जो आजकल परगना कानपुर सदर में समाहित है। जाजमऊ कस्बे की बसावट उजाड़ व गंगा की ओर लगभग 60 फुट ऊंचे कगारो से युक्त एक मील लंबाई के विशाल टीले के रूप में है। जाजमऊ टीला वर्तमान में बहुत ही अतिक्रमित है।

अनूप कुमार शुक्ल
महासचिव इतिहास समिति, कानपुर

पौराणिक उपाख्यान के मुताबिक जाजमऊ का नाम ययातिमऊ था। महाराज नहूष के पुत्र ययाति का यहां पर किला था। राजा ययाति का विवाह असुरराज वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा और असुरगुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से हुआ था। पौराणिक उपाख्यान के अनुसार असुरराज वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा से ययाति का विवाह हुआ। एक दिन शर्मिष्ठा व देवयानी अन्य सखियों के साथ सरोवर स्नान कर रही थी,उन सभी के वस्त्र सरोवर तट पर रखे हुए थे,उसी समय शिव-पार्वती सरोवर के पार्श्व से निकले,सभी कन्याएं सकुचाकर सरोवर से निकलकर शीघ्रता से वस्त्र बदलने लगी। शीघ्रता मे शर्मिष्ठा व देवयानी ने एक दूसरे के वस्त्र पहन लिए,अतः शर्मिष्ठा व देवयानी में विवाद हो गया। शर्मिष्ठा ने देवयानी से वस्त्र छीनकर उसे कुएं में ढकेल दिया। बाद में देवयानी को राजा ययाति ने कुएं से अपने दुपट्टे के सहारे से बाहर निकाला। देवयानी देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कच के श्राप से श्रापित होने के कारण ब्राह्मण विवाह से वंचिता थी। देवयानी ने हाथ पकड़ कर कूप से बाहर निकालने वाले राजा ययाति से विवाह का प्रस्ताव रखा जिसे ययाति ने प्रारब्ध मानकर स्वीकार कर लिया। राजा ययाति ने शर्मिष्ठा पुत्र पुरु से उसका यौवन मांगकर युवा हुए और काम से तृप्त होकर अपने पुत्र पुरु को यौवन वापस कर देने का आख्यान विशेष रूप से ख्यात रहा। राजा ययाति के पुत्र यदु से यादव और पुरु से पौरव क्षत्रियवंश प्रसिद्ध हुए। बहुत समय तक मध्यदेश का यह अंतर्वेद राजा ययाति व उनके वंशजों के अधीन रहा। राजा ययाति की स्मृति लिए जाजमऊ और देवयानी की स्मृति लिए देवयानी सरोवर, मूसानगर, कानपुर में विद्यमान है।

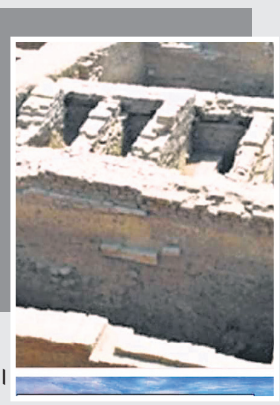

एक अन्य अनुश्रुति है कि जाजमऊ का किला चंदेल राजा चन्द्रवर्मा का है। महमूद गजनवी (997-1030 ई.) के साथ भारत आया अल-बेरुनी (973- 1048 ई.) ने अपनी किताब 'किताबुल हिंद' में जाजमऊ का उल्लेख जज्जामऊ के रूप में मिलता है। जाजमऊ का दूसरा नाम सिद्धपुर भी मिलता है और उसकी स्मृति में सिद्धनाथ महादेव व सिद्धा देवी के मंदिर व घाट गंगातट आज भी अवस्थित है, लेकिन वर्तमान में राजस्व अभिलेखों में वजिदपुर दर्ज है। लब्धप्रतिष्ठ पुरातत्वविद स्व. डॉ. एल एम वहल ने जाजमऊ के पुरावैभव को भी प्रकाश में लाए। डॉ. वहल के मुताबिक सन् 1950 ई. के लगभग राजकुमार सिन्हा (प्रसिद्ध क्रांतिकारी) ने ताम्रयुगीन-ताम्रीन आयुध इस पुरास्थल से खोजे निकाले।

उन ताम्रायुधों में मुख्यतः कांटेदार बर्छी, कुल्हाड़ी, गोलछल्ला थे। इन आयुधों को लगभग 2000-2500 वर्ष ईसा पूर्व का माना गया है। जाजमऊ के सर्वेक्षण व अन्वेषण से प्राप्त मृदभांडों में विशेष रूप से उल्लेखनीय गेरुए रंग के मृदभांड (ओ.सी.पी.) लाल व श्यामवर्ण के पालिशदार मृदभांड भूरे रंग के चित्रित मृदभांड (पी.जी.डब्लू) उत्तरी कृष्ण परिमार्जित मृदभांड (एन.बी.पी) और उसके बाद शुंग, कुषाण, गुप्त मध्य कालीन व मुस्लिम ग्लेजड वेयर के मृदभांड भी वहां से प्राप्त हुए हैं। पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार उपरोक्त उल्लेखित मृदभांडों की तिथि लगभग 2000 वर्ष ई.पू. से 1700 ई. के आसपास आती है।

जमीर की आवाज

अमेरिकी इतिहास में एक आदमी ने अपने जमीर की आवाज पर लब्बैक कहते हुए एक बड़ी जंग का एलान किया था। 1960 में ग्रीष्म कालीन ओलम्पिक में लाइट हेवीवेट चैंपियन का खिताब जितने वाले मुहम्मद अली ने 1961 को इस्लाम कुबूल किया था और 1964 में सोनी लिस्टन को हराकर वर्ल्ड हेवीवेट चैंपियन बन चुके थे। इसी वर्ष वियतनाम जंग में अमेरिका बाकायदा शामिल हुआ था। अमेरिका में इस युद्ध के खिलाफ आम राय बनती जा रही थी,लेकिन अमेरिकी प्रशासन अपने इस अभियान के लिए जबरदस्ती सैन्य भर्ती पर आमादा था और हुकूमत बशऊर मुखालफीन पर अपनी गिरफ्त मजबूत करती जा रही थी जिसकी वजह से "मुखालफीन" कनाडा की तरफ फरार होने को मजबूर थे।

मुहम्मद अली का बहैसियत एक इंसान और एक अमेरिकी कलर का मुस्लिम,इस युद्ध के प्रति अपना एक नजरिया था।

अली का कनाडा भागने का कोई इरादा नहीं था,लेकिन सेना में सेवा करने का भी उनका कोई इरादा नहीं था। अली का कहना था,"मेरी अंतरात्मा मुझे बड़े शक्तिशाली अमेरिका के लिए अपने भाई या कुछ काले लोगों या कुछ गरीब भूखे लोगों को कीचड़ में गोली मारने नहीं देगी और उन्हें किस लिए गोली मारी जाए? उन्होंने मुझे कभी निग्गर नहीं कहा,उन्होंने मुझे कभी नहीं मारा,उन्होंने मुझ पर कोई कुत्ता नहीं छोड़ा, उन्होंने मेरी राष्ट्रीयता को नहीं लूटा,मेरी मां और पिता का बलात्कार और हत्या नहीं की। उन्हें किस लिए गोली मारूं? मैं उन गरीब लोगों को कैसे गोली मार सकता हूं? बस मुझे जेल ले चलो।"

1966 में वियतनाम युद्ध अपने शबाब पर था, वियतनामियों के साथ अमेरिकी सैनिक मारे जा रहे थे। अमेरिकी प्रशासन अली के नजरिए से काफी रुष्ट था। लिहाजा 28 अप्रैल 1966 को हॉस्टन स्थित आर्म्ड फोर्सेस इंडक्शन सेंटर में मुहम्मद अली को तलब किया गया। सुबह 8 बजे से कुछ मिनट पहले नीले सिल्क सूट पहने कैब से अली बाहर निकले।

प्रसिद्ध स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट, हॉवर्ड कॉसेल ने अली के सामने माइक्रोफोन थमा दिया और जानना चाहा कि अब वह क्या करेंगे? कॉसेल ने बॉक्सर को उकसाया,"आपके ख़िलाफ़ कार्रवाई दो घंटे में दर्ज हो जाएगी।" उधर कैमरों ने रौशनी फेंकी, इधर अली मुस्कुराए और कहा, "नो कमेंट।"

इंडक्शन सेंटर के अंदर जब अली का पूर्व नाम कैसीयस क्ले पुकारा गया तो उन्होंने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया। अली की आत्मकथा, "द ग्रेटेस्टः माई ओन स्टोरी" के अनुसार, एक वरिष्ठ अधिकारी ने अली को लाइन से अलग किया और उन्हें केंद्र के कार्यालय में ले गया और पूछा कि क्या अली "इस अमल की गंभीरता" को समझते हैं। अली ने उत्तर दिया कि बेशक वह समझते हैं। अधिकारी ने अली को बाहर निकाला और एक बार फिर एक लेफ्टिनेंट ने उसका नाम पुकाराः "मिस्टर कैसियस क्ले,आप कृपया आगे बढ़ें और संयुक्त राज्य की सेना में शामिल हों।"

असग़र मेहदी
लखनऊ

अली ने फिर आगे बढ़ने से इंकार किया।

कुछ मिनट बाद,अली इंडक्शन सेंटर के बाहर दिखाई दिए और एक बयान दियाः "यह एक मुस्लिम प्रतिनिधि के रूप में मेरी चेतना और मेरे अपने व्यक्तिगत विश्वासों के आलोक में है कि मैं सेना में शामिल होने के आह्वान को अस्वीकार करने में अपना स्टैंड लेता हूं। मुझे लगता है कि मैं इस तरह के आह्वान को स्वीकार करके अपने धर्म में अपने विश्वासों के प्रति सच्चा नहीं हो सकता।

मैं अपने विवेक द्वारा किए गए उन कार्यों के अंतिम न्यायाधीश के रूप में अल्लाह पर निर्भर हूं।"

इसके बाद अली से उनका बॉक्सिंग लाइसेंस छीन लिया गया। 20 जून, 1967 में अली को ह्यूस्टन की एक जूरी ने यूनिवर्सल मिलिट्री ट्रेनिंग एंड सर्विस एक्ट के उल्लंघन के आरोप में दोषी ठहराया। न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार,संघीय जिला न्यायाधीश जो ई इंग्राहम ने क्ले को पांच साल जेल की सजा सुनाई और उन पर 10,000 डॉलर का जुर्माना लगाया।

मुक्केबाजी से प्रतिबंधित, अली और उनके वकील अगले चार साल इस फैसले के खिलाफ लड़ते रहे। जैसे-जैसे वियतनाम युद्ध अलोकप्रिय होता गया, अली ने विश्वविद्यालय परिसरों में भाषण दिए वह युद्ध-विरोधी और नागरिक अधिकार के मुहाफिज और एक नायक बनकर उभरे। अली ने एक कॉलेज में युद्ध विरोधी प्रदर्शनकारियों की भीड़ से कहा।

"कहा गया है कि मेरे पास दो विकल्प हैं या तो जेल जाओ या सेना में जाओ,लेकिन मैं कहना चाहूंगा कि एक और विकल्प है। वह विकल्प न्याय का है और यदि न्याय हुआ तो मैं न तो सेना में जाऊंगा और न ही मैं जेल जाऊंगा।" उनके साथ कैसे इंसाफ़ हुआ,वह तारीख का अलग हिस्सा है।

शहजादे का जन्मदिन और खुशियां

31 अगस्त की भोर की बात थी वह। पुराने कैलेंडर के अनुसार बुधवार का दिन था,पर नई राशि के अनुसार वह रविवार था। बेगम को प्रसव पीड़ा हुई। जब पीड़ा असहनीय होने लगी,तब शाही दाई जो पहले से ही वहां मौजूद थी,ने आकर जोधाबाई को प्रसव कराया। नियत समय पर फतेहपुर सीकरी के शेख सलीम चिश्ती के पड़ाव पर,उनके परिवार की महिलाओं के बीच मुल्क की रानी,बेगम जोधा बाई ने एक पुत्र को जन्म दिया।

उस दिन सवेरे से ही उमस थी,पर दोपहर होते-होते आसमान पर बरसने वाले बादलों और हल्की ठंडी हवाओं ने एक खुशनुमा माहौल का आगाज कर दिया था,पर यह नहीं कहा जा सकता था कि क्या ये बादल बरस कर राहत दिलाने आए हैं! लेकिन सच यही था। वे जब बरसे तो एक ऐसे अहसास के साथ बरसे कि आम लोग ही नहीं,उनके बुजुर्ग भी ऐसी बरसात याद रखने के लिए मजबूर हो गए। शेख सलीम चिश्ती की बात सच निकली थी। यह एक स्वस्थ और दमकते चेहरे वाला बेटा था। यह शहजादा सलीम था,जो बाद में मुगल बादशाह जहांगीर कहलाया।

राजगोपाल सिंह वर्मा
वरिष्ठ लेखक, आगरा

बादशाह अकबर तब आगरा किले में थे। जनता की फरियाद सुनने और उम्मीद से आए लोगों की समस्याओं को निपटाने से फारिग होकर वह नमाज पढ़ने जाने के लिए निकल ही रहे थे,कि फतेहपुर सीकरी से आए शेख इब्राहीम ने आगे बढ़कर सलाम अर्ज किया। शेख इब्राहीम शेख सलीम चिश्ती के दामाद थे,इसलिए सम्मानीय थे। फिर फतेहपुर सीकरी से आए थे,कुछ तो खास रहा होगा। अकबर ने उनकी चमकती आंखों को पूर्व में ही पढ़ लिया था,फिर भी थोड़ा उत्सुकतावश और थोड़ा औपचारिकतावश पूछा, "सब खैरियत है, जनाब?"

इब्राहीम ने कहा, "हुजूर, खैरियत से भी बड़ी खैरियत है। खुशखबरी है! बेटा हुआ है, बेटा। आपकी इस मुगल सल्तनत का वारिस जन्मा है। आपको बहुत-बहुत मुबारक।" शेख सलीम चिश्ती के दामाद के मुंह से ये शब्द सुनकर एकबारगी बादशाह अकबर को समझ नहीं आया कि वह कैसे अपनी खुशियों का इजहार करें। ऐसा क्या करें कि भावनाओं की बाड़ टूट जाए। दुनिया जानती थी कि उनके मन में इससे बड़ी कोई और मुराद न थी। यह बच्चा उनकी अनगिनत मन्नतों और सलीम चिश्ती की प्रार्थनाओं में उनके अटूट भरोसे का प्रतीक भी था। बादशाह ने अपने शरीर को टटोला। फिलहाल उनके गले में एक बहुमूल्य रत्न जड़ित माला पड़ी थी,उन्होंने हर्ष में आकर वही माला उतारी और शेख इब्राहीम के गले में डाल दी। यह बादशाह अकबर की रानी जोधाबाई की कोख से जन्मे अपने पुत्र जो सलीम कहलाया,की मुबारक खुशी की पहली खबर सुनने का तोहफा जो था।

शेख इब्राहीम ने झुककर बादशाह को सलाम किया और दुआएं दीं,"अल्लाह के फजल से आपका वंश फले-फूले, शहजादा सलीम आपकी ही तरह नाम कमाए, बरकत पाए,लोगों के दिलों में राज करे और सल्तनत का फैलाव करे,बस यही दुआ है।"

बादशाह अकबर ने आकाश की ओर दोनों हाथ उठाकर कहा,"आमीन! आज का यह मुबारक दिन

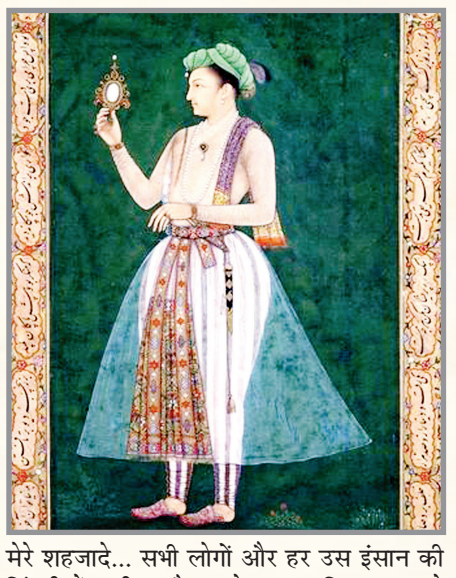

मेरे शहजादे... सभी लोगों और हर उस इंसान की जिंदगी में खुशी का पैगाम लेकर आए जिसका मुझसे थोड़ा भी वास्ता रहा हो। आज खास जश्न का मुबारक दिन है।"

बादशाह के चेहरे पर छाई खुशनुमा रंगत बता रही थी कि वह कितने उल्लासित थे। दरअसल इस खुशी का एक कारण था। किसी संतान के अभाव में बादशाह अकबर का अपने उत्तराधिकारी के लिए चिंतित हो जाना स्वभाविक था। बादशाह ने इस समस्या के निदान हेतु एक दरवेश का आशीर्वाद लिया था,जो न केवल उनकी, बल्कि मुल्क की खुशी के लिए था। उनकी खुशी भी किसी आम जन से अलग तो न थी। हिंदुस्तान जैसे मुल्क का बादशाह होना कितना खास था जिसको अपना बनाने की हसरत लिए न जाने कितने सूरमा मिट्टी में मिल गए थे और उनको? अकबर को अपने पुरखों से यह साम्राज्य मिला,तो तश्तरी पर सजाकर,एक भेंट की तरह। अब यह उनका फर्ज बनता था कि इस मुल्क को ऐसा बनाकर रख दें कि तवारीख में उनका नाम ऐसे चमके जैसे कोई सितारा हमेशा के लिए अपनी चमक बनाए रखता हो। अल्लाह ने इसीलिए तो उन्हें पुत्ररत्न दिया था कि वह उनका इस काम में साथ दे सके,वह मुल्क के एक बेहतरीन बादशाह कहलाए जिन्हें लोग पीढ़ी दर पीढ़ी याद करें। यही उम्मीद वह अभी-अभी जन्मे शहजादे सलीम से भी रखते थे।

बादशाह अकबर नमाज पढ़ने चले गए,परंतु वहां से वापस आते ही सीधे शेख सलीम चिश्ती के पास फतेहपुर सीकरी पहुंचे और उनकी ड्योढ़ी को नमन किया। शेख सलीम चिश्ती और बादशाह अकबर की निगाहें मिली तो दोनों मंद-मंद मुस्कुराए। पास आकर बादशाह ने शेख सलीम चिश्ती के पास जमीन पर बैठकर अपनी कृतज्ञता जताई। बोले,"अल्लाह ने जो दिया है वह उस सब से कहीं ज्यादा है,जो अभी तक मेरे पास मौजूद है। मुझे मिली इस सौगात के फरिश्ते आप ही हैं,इसलिए मैंने तय किया है कि मैं उसका नाम सलीम रखूंगा। दुआ कीजिए कि यह सलीम इस मुल्क का अगला बादशाह हो और मुझसे भी कहीं अधिक नाम कमाए।"

शेख सलीम चिश्ती ने अपनी श्वेत-धवल दाढ़ी पर हाथ फिराते हुए कहा,"यह तो सब अल्लाह की देन है, उसकी मर्जी है। वह आप पर मेहरबान है तो फिर हम जैसे आम इंसानों की क्या हैसियत। खुदा करे कि आप पर अल्लाह की यह मेहरबानी हमेशा बनी रहे। जाइए,जश्न मनाइए, जैसा आप सोचते हैं वैसा ही होगा।"